संसद में भोजपुरी
अतीत आ बर्तमान

शुभनीत कौशिक

संसद में भोजपुरी

अतीत आ बर्तमान

शुभनीत कौशिक

प्रकाशन वर्ष : 2025

सर्वाधिकार से मुक्त

समर्पण

भोजपुरी भासा

आ

भोजपुरिया समाज ख़ातिर

अनुक्रम

भूमिका : संसद में भोजपुरी आ भासाई अस्मिता के सबाल..... 1
संबिधान सभा आ अस्थायी संसद में भोजपुरी 11
लोक सभा में भोजपुरी..... 16
राज्य सभा में भोजपुरी 55
भोजपुरी : संसद से सड़क ले…..... 76
जरुरी संदर्भ 81
लेखक परिचय..... 83

तसबीर

सांसद गैलरी (लोक सभा) 52
सांसद गैलरी (राज्य सभा) 75

भूमिका : संसद में भोजपुरी आ भासाई अस्मिता के सबाल

भोजपुरी पुरबी भा मागधी परिबार के भासा बा। भोजपुरी भासा के नाम बिहार के 'भोजपुर' इलाक़ा के नाम पे धराइल बा। भोजपुरी भासा के बिद्वान उदय नारायण तिवारी लिखलें बाड़ीं कि 'अठारहवीं सदी में भोजपुर एगो प्रांत रहे। धीरे-धीरे एकरे बिसेसन, "भोजपुरी", एही इलाक़ा के लोगन ख़ातिर आ इहाँ के बोली ख़ातिर इस्तेमाल होखे लागल। एही प्रांत के बोली एकरा उत्तर, दक्खिन आ पच्छिम के इलाको में बोलल जात रहे। एकरा चलते भूगोल के लिहाज़ से उ इलाक़ा भोजपुर प्रांत के बहरी होखला के बावजूद उहाँ के जनता आ ओकर भासा ख़ातिर 'भोजपुरी' सब्द के इस्तेमाल होखे लागल।'[1] 'भोजपुरी' नाम के परम्परा ढेर ना तऽ तीन सै साल पुरान तऽ बटले बा।

भोजपुरी इलाक़ा के बिस्तार लगभग चालीस से पचास हज़ार बर्गमील बाटे।[2] उत्तर परदेस, बिहार आ झारखंड में भोजपुरी बोले बाला लो के तादाद सभसे ढेर बा। जहवाँ उत्तर परदेस के पुरबी इलाक़ा के बनारस, चंदौली, संत रविदास नगर (भदोही), जौनपुर, ग़ाज़ीपुर, आज़मगढ़, मऊ, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, संत कबीर नगर आ बस्ती ज़िला में भोजपुरी बोलल जाले। ओहिजें बिहार के पच्छिम चम्पारन, गोपालगंज, सीवान, सारन, भोजपुर, कैमूर (भभुआ), रोहतास आ झारखंड के पलामु, गढ़वा

[1] उदय नारायण तिवारी, *भोजपुरी भाषा और साहित्य* (पटना : बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद, 2011), तीसरा संस्करण, पृ. 233.

[2] कृष्णदेव उपाध्याय, *भोजपुरी साहित्य का इतिहास* (वाराणसी : भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, 1972), पृ. 15.

आ राँची लेखा ज़िलन में भोजपुरी बोलल जाले। रोज़गार के तलास में भोजपुरिया लो देस के कोना-कोना में फैलल बा आ जहवाँ भोजपुरिया लो बाटे उहाँ आपन बोली-भासा के बेवहार करेलें आ आपन पहिरावा, खान-पान आ रीत-रिवाज के संभार के रखले बाड़ें। एकरा अलाबा नेपाल, मारीशस, सूरीनाम, गयाना लेखा देसन में भोजपुरी बोले बाला लो ठीक-ठाक तादाद में बाड़ें।

जहवाँ ले उत्तर भारत में भासा के राजनीत आ भासाई अस्मिता के बनला के ताल्लुक़ बा तऽ ओकर सुरुआत त ओनइसवीं सदिये में सुरु हो जाला। बीसवीं सदी के सुरुआती दसक में महतमा गांधी के पहल पे भारतीय रास्टीय कांगरेस भासाई अधार पे प्रांतीय कांगरेस समिति बनवला के बिचार के मान लेवेले। आज़ादी के नायकन के दिल-दिमाग़ में हिंदुस्तान के भासन ख़ातिर बहुत सम्मान रहे। आज़ादी के लड़ाई में हिंदुस्तान के भासा आ साहित के खास योगदान रहे, इहो बात के भुलाये के ना चाहीं। भोजपुरियो के तमाम साहितकार, रचनाकार आ लेखक आज़ादी के लड़ाई में आपन कलम से तऽ योगदान देबे कइलें, आज़ादी के लड़इयो में भाग लिहलें, जेल गइलें आ पुलिस के लाठी खइलें।

एक ओरी जहाँ ई सगरी भासा आज़ादी के लड़ाई से हिंदुस्तान के आम लोगन के जोड़ला के साधन रहलीं सऽ, ओहिजें भासो के लेके राजनीत बीसवीं सदी में ज़ोर पकड़ लिहलस। ओनइसवीं सदी के आख़िर में सुरु होखे वाला हिंदी आ उर्दू के बिबाद ओकर उदाहरन बाटे। इहवाँ ओही बिबाद के कारन

आ ओकर इतिहास में जाइला के जरुरत नइखे। काहें से कि हिंदी-उर्दू बिबाद के लेके बहुत कुछ लिखल गइल बा।[3]

भोजपुरी भासा के लेके संसद के दुनो सदन में होखे बाला चरचा के पड़ताल एही किताबी में कइल गइल बा। एतने ना संबिधान सभा आ ओकरी बाद अस्थायी संसद में भोजपुरी के लेके का बिचार-मंथन होखल ओकरो हबाला एही किताबी में मिली। संबिधान सभा आपन आख़िरी दउर में भासा के सबाल पे बिचार कइलस आ भासा के लेके भारत के संबिधान के अठवाँ अनुसुची बनवलस। आ ई अकारन नइखे कि भोजपुरी के लेके जेवन चरचा संसद के दुनो सदन में होखल ओकरा में सभसे अहम मुद्दा रहे – भोजपुरी के संबिधान के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के। अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी के सामिल कइला के माँग होखे भा साहित अकादमी से भोजपुरी के मान्यता आ प्रोत्साहन दियवला के मुद्दा होखे, टीवी आ रेडियो पे भोजपुरी परोग्रामन के प्रसारण होखे, भोजपुरी फ़िलिम के बनला और प्रसारण के मुद्दा होखे, जनगणना में भोजपुरी बोले बाला लो के तादाद के सबाल होखे, भोजपुरी भासा आ भोजपुरिया राज्य के माँग होखे एही तमाम सबालन के लेके संसद में सुरु से लेके आ आजु के समय ले होखे बाली चरचा के बिस्तार से पड़ताल एही किताबी के अगिला अध्यायन में भइल बा।

देस के आज़ादी मिलला के दु साल बाद संबिधान सभा हिंदी के राजभासा के दर्जा दिहलस आ हिंदी के लेके हिंदुस्तान के चौदह गो भासन के अठवाँ अनुसुची में राखल गइल। साठ के दसक के आख़िर

[3] देखीं, क्रिस्टोफर किंग, *वन लैंगवेज़ टू स्क्रिप्ट्स : द हिंदी मूवमेंट इन द नाइंटीन्थ सेंचुरी नॉर्थ इण्डिया* (बंबई : ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994).

से भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में जोड़ला के माँग उठे सुरु होखल आ आजु ले ई माँग उठ रहल बा। तभ से लेके केतना सरकार अइलीं-गइलीं सऽ, बेर-बेर अस्वासन दियाइल, बाकिर भोजपुरी के माँग अबहियों जस के तस बा। संबिधान के अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी के सामिल कइला के लेके माँग जेवना घरी से उठ रहल बा तभ से लेके आठ गो भासा अनुसुची में जोड़ा गइलीं सऽ, बाकिर भोजपुरी के बारी ना आइल।

ओही घरी अठवाँ अनुसुची ख़ातिर दावेदारी करे बाला भासा कम रहलीं सऽ, बाकिर आजु भोजपुरी के लेके 38 गो भासा बाड़ीं सऽ, जेकनी के अठवाँ अनुसुची में जोड़ला के माँग सरकार से होखत बा। ई भासा हईं सऽ : अंगिका, बनजारा, बजिका, भोजपुरी, भोटी, भोटिया, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, धाटकी, अंगरेज़ी, गढ़वाली (पहाड़ी), गोंडी, गूजरी, हो, कच्छी, कामतापुरी, कारबी, ख़ासी, कोडावा, कोकबोरोक, कुमाऊँनी, कुरुख (कुड़ुख), कुड़माली, लेपचा, लिम्बू, मिजो, मगही, मुंडारी, नागपुरी, निकोबारी, पहाड़ी (हिमाचली), पाली, राजस्थानी, संभलपुरी/कोसली, शौरसेनी (प्राकृत), सरायकी, टेनयीडी (अंगामी), तुलू।[4]

संसद में भोगेंदर झा से लेके प्रभुनाथ सिंह, रघुबंस परसाद सिंह, जगदंबिका पाल लेखा तमाम सांसद लो भोजपुरी के पच्छ में आवाज़ उठवलें। कबहुँ खाली भोजपुरी के लेके, तऽ कबहुँ मैथिली, राजस्थानी,

[4] संसद में भासा के लेके होखे बाला चरचा के पड़ताल ख़ातिर देखीं, बी.एल. शंकर व वैलेरियन रोड्रिग्स, द *इंडियन पार्लियामेंट : ए डेमोक्रेसी एट वर्क* (नई दिल्ली: ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011), पृ. 174-209.

संथाली, नेपाली आ दोसर भासन के संगे। दिलचस्प बात बाटे कि ओमें से कइगो भासा जइसे मैथिली, नेपाली आ संथाली तऽ अठवाँ अनुसुची में जोड़ा गइलीं सऽ, बाकिर भोजपुरी अबहियों आपन भाग फिरला के घड़ी जोहत बिया।

अठवाँ अनुसुची में अबहीं ले जगह ना मिलला के बावजूद संसद में भोजपुरी आ ओकर पच्छधर सांसद लो बड़ा संघर्स कइले बाड़ें। एकरा से इनकार ना कइल जा सकेला। एगो उहो ज़माना रहे जब भोजपुरी के बात उठे, तऽ मंतरी लो आ कुछ सांसद लो भोजपुरी के भासा मानला से साफ़े इनकार कर दें आ कहें कि भोजपुरी भासा नइखे, उ तऽ हिंदी के बोली बिया। अचरज के बात बा कि कुछ लो आजहुँ इहे सोचेला कि भोजपुरी बोली बिया, भासा ना। आ ओकरो से बढ़के त्रासदी तऽ ई बाटे कि भोजपुरिया इलाको में अइसन सोच राखे बाला लो के कमी नइखे।

बाकिर जहवाँ ले संसद के ताल्लुक़ बा त नब्बे के दसक बीतत-बीतत एतना तऽ जरुर होखल कि मंतरी होखें चाहें सांसद, सभके भोजपुरी के भासा मानहीं के परल। अब भोजपुरी के बोली बता के ओकर जायज़ माँग के टरकावल सम्भव ना रह गइल। भोजपुरी के माँग उठावे बाला सांसद लो के भीतर एगो दुचित्तापनो देखाला, ख़ासकर सत्तर आ अस्सी के दसक में। उ लो बेर-बेर ई कहे कि भोजपुरी के माँग उठवला से हिंदी के केवनो नुकसान ना होखी। कि उ लो भले भोजपुरी माँग उठावत बाड़ें बाकिर उ लो हिंदी के समर्थक बाड़ें आ भोजपुरी के माँग उठवला से देस के एकता के केवनो नुकसान ना बा। साठ के दसक में भोजपुरी इलाक़ा के कुछ सांसद लो तऽ संसद में इहवाँ ले कह देलें कि हमनी के भोजपुरी, मगही के किनारे राखिके हिंदी के पच्छ में खड़ा रहब जा।

जाहिर बा कि भोजपुरी के पच्छ में माँग उठावत घरी ई सफाई दिहला के केवनो जरुरत ना रहे, आ ना भोजपुरी हिंदी आ केवनो दोसर भासा के बिरोधी रहे। भोजपुरी त खाली आपन हक़, आपन वाजिब अधिकार माँगत रहे। बाकिर भोजपुरी के माँग उठावे बाला सांसद लो के मन में जेवन दुचित्तापन देखाला, उ ओ घरी के देस के हालत आ राजनीतिक दबाव के नतीजो हो सकेला। आ ई एक ढंग से ठीके भइल कि उ लो भोजपुरी के माँग उठावत घरी हिंदी भा केवनो दोसर भासा बोले बाला लो से टकराव के स्थिति ना बने दिहलें।

एकरा में केवनो दु राय नइखे कि भोजपुरिया इलाक़ा के कुछ सांसद लो भोजपुरी के लेके लगातार संघर्स कइले। इच्छा रहला के बावजूद संसद में भोजपुरिया इलाक़ा के सांसद लो के भोजपुरी में भासन दिहला भा सपथ लिहला के अनुमती ना मिलल। जो कबहुँ केवनो सांसद संसद में भोजपुरी बोलला के कोसिस कइलें, तऽ सदन के स्पीकर उहाँ के भोजपुरी के जगहे हिंदी में बोलला के कहे लागलें, उहाँ के बइठा दिहलें भा ओही सांसद के बात सदन के रिकॉर्ड से बहरी कऽ दिहल गइल। भोजपुरीभासी इलाक़ा से आवे बाला सांसदन के संगे ई अजीब त्रासदी रहे।

एही रोक-टोक के बावजूद संसद में घरी-घरी सांसद लो भोजपुरी खिस्सा, कहावत, मुहावरा के इस्तेमाल आपन भासन में कइलें। एकरो के भासाई प्रतिरोध के एगो नमूना मानल जा सकेला। अइसन सांसदन में लालू यादव (सारन), रघुबंस परसाद सिंह (बैसाली), चंद्रिका परसाद (बलिया), हीरालाल राय (छपरा), तेज नारायण सिंह (बक्सर), रामबहादुर सिंह (महाराजगंज), रमासंकर राजभर (सलेमपुर), मोहन सिंह (देवरिया) के नाम परमुख बा। इहवाँ ले कि फ़रबरी 2021 में प्रधानमंतरी नरेंदर मोदी लोकसभा में दिहल

आपन भासन में भोजपुरी के एगो कहावत के इस्तेमाल कइलें : ‘न खेलब, न खेले देब, खेलबे बिगाड़ब’। एकरो ले नौ बरिस पहिले मार्च 2012 में भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर होखत चरचा में भाग लेत ओ घरी के गृह मंतरी पी. चिदम्बरम भोजपुरी में कहलें रहलें कि ‘हम रउआ सभके भावना समझऽतानि।’ भोजपुरीभासी जनता के रिझावे ख़ातिर चुनावी रैली में प्रधानमंतरी से लेके बड़-बड़ नेता लो के भोजपुरी के इस्तेमाल करल एगो आम बात बा, उ भासा के एगो राजनीतिक प्रतीक लेखा इस्तेमाल बा। बाकिर भासा के संबिधानिक अधिकार दिहला से ओकर केवनो ताल्लुक़ नइखे, ई सचाई भोजपुरी के प्रतीकात्मक इस्तेमाल आ संबिधान के लिहाज़ से ओकर असल हालत पे गौर कइला से साफ़े बूझा जाले।

केंद्र सरकार से भोजपुरी के संबिधान के अठवाँ अनुसुची में जोड़ला के माँग तऽ अपनी जगह बटले बा। बाकिर इहो एगो जायज़ सबाल बाटे कि भोजपुरी इलाक़ा के राज्य के सरकार आज़ादी के बाद के अठहत्तर साल में भोजपुरी भासा ख़ातिर का प्रयास कइले बाड़ीं सऽ। ओही राज्यन के इस्कूल, कॉलेज आ इनवरसिटी में भोजपुरी के केतना जगह मिलल बाटे आ कहवाँ-कहवाँ भोजपुरी के पढ़ाई-लिखाई होत बा आ भोजपुरी के ज़रिए पढ़ावल जात बा। सबाल इहो बा कि भोजपुरीभासी इलाक़ा के कोरट-कचहरी आ सरकारी कार्यालय में भोजपुरी के केतना इस्तेमाल होत बा। एकरा में केवनो दु राय नइखे कि इस्कूल से लेकर इनवरसिटी, कोरट-कचहरी आ सरकारी कामकाज जइसन एही तमाम इदारन में मातृभासा के जेतना बढ़ावा मिली, लोकतंत्र ओतने मज़बूत होखी। बाकिर ई बात खाली केंद्र सरकारे पे लागू ना होखेले, भोजपुरीभासी राज्यन के सरकारो पे ई बात ओतने लागू होखेले। भोजपुरी भासा के

हालत, भोजपुरी भासा आ साहित के बिकास के जवाबदेही भोजपुरीभासी राज्यन के सरकारो के ओतने होखेले जेतना कि केंद्र सरकार, बलुक केंद्र सरकार से कहीं ज़्यादे एही राज्यन के ज़िम्मेदारी बाटे कि उ भोजपुरी के लेके ज़बानी जमाखर्च कइला के बजाय कुछ सार्थक काम करें सऽ।

अठवाँ अनुसुची में जोड़ला के माँग के अलावा संसद में साहित अकादमी में भोजपुरी के मान्यता दिहला के सबालो उठल। मान्यता दिहला के कसौटी का बा, साहित अकादमी भोजपुरी के बिकास ख़ातिर का करत बिया, प्रकासन बिभाग केतना भोजपुरी के किताब छापल हऽ, ई सगरी सबाल संसद में बखत-बखत पे उठल।

संचार आ तकनीक के जइसे-जइसे बिकास भइल बा, रेडियो, टीवी आ फ़िलिम में भोजपुरी के लेके सबालो संसद में उठल। रेडियो आ आगे चलिके एफ़एम से जुड़ल सबालन में भोजपुरी कार्जक्रम के प्रसारण, भोजपुरी इलाक़ा के रेडियो इस्टेसन से होखे वाला प्रसारण के भासा आ समय के लेके सबाल तऽ संसद लो पूछबे कइलें। ओकरा संगे दूरदरसन पे भोजपुरी के परोग्राम के प्रसारण, दूरदरसन के इस्टेसन से होखे बाला प्रसारन में भोजपुरी कार्जक्रम के समय आ भोजपुरी चैनलन के लेके सबालो संसद में पूछाइल। एकरा संगे-संगे सेंसर बोर्ड के पास कइल भोजपुरी फ़िलिमन के संख्या, भोजपुरी फ़िलिमन के निर्माण में सरकार आ फ़िल्म फ़ाइनेंस कारपोरेसन/एनएफ़डीसी के सहजोग आ फ़िलिम समारोहन में देखावल जाए बाली भोजपुरी फ़िलिमन मुद्दो संसद में उठल।

भोजपुरी के लेके होखे बाला चरचा में मारीशस, सूरीनाम, गयाना लेखा देसन के चरचो बखत-बखत पे होखल। ई उ देस हवँ सऽ जहवाँ भोजपुरिया लो कबहुँ गिरमिटिया मज़दूर लेखा गइलें आ ओहिजें बस

गइलें। बाकिर आपन भासा, धरम, रीत-रिवाज आ संसकिरती उ लोग बचा के रखलें। संसद में जब-जब दुनिया में भोजपुरी बोले बाला लोगन के तादाद के बात होखल, तऽ एही सभ देसन के लोगन के चरचा जरुर होखल। बिस्व भोजपुरी सम्मेलन, मारीशस में भोजपुरी के मान्यता के जिकिर संसद में कई हाली भइल। दुनिया भर के तमाम देसन में बसल भारतीय मूल के केतना लो भोजपुरी बोलेलें, एकरो के लेके सबाल संसद में पूछल गइल।

आ एही क्रम में हिंदुस्तान में भोजपुरी बोले बाला लो के तादाद आ जनगणना में दर्ज़ कइल भोजपुरी भासी लो के संख्यो के लेके सबाल उठल। साठ आ सत्तर के दसक में जेवन आँकड़ा जनगणना के हबाले से संसद में दिहल गइल ओकरा के देखला से साफ़ बूझा जाला कि आँकड़ा एकदम ग़लत बा। हलांकी आगे चलिके एकरा में सुधार होखल। 2001 के जनगणना के संसद में दिहल के मुताबिक़ भोजपुरी भासी लो के तादाद तीन करोड़ एकतीस लाख (3,30,99,497) रहे। 2011 के जनगणना में भोजपुरी भासी लो के तादाद बढ़के पाँच करोड़ पाँच लाख (5,05,79,447) हो गइल।[5] बाकिर जनगणना में दिहल ई संख्या भोजपुरी के समर्थक सांसद लो के बतावल भोजपुरी भासी लो के तादाद से तीन गुना कम रहे। ओही घरी भोजपुरी के माँग उठावे बाला सांसद लो भोजपुरीभासी लो के संख्या पंद्रह से बीस करोड़ बतावत रहलें बाकिर जनगणना में भोजपुरी बोले बाला लो के आँकड़ा पाँच करोड़ पाँच लाख पे थम गइल रहे। एह आँकड़ा के कमी के बावजूद ई आँकड़ा पचास के दसक के उ आँकड़ा से तऽ बहुते ठीक बा, जहवाँ भोजपुरीभासी लो के कुल्ही संख्या खाली एकइस सै बतावल गइल रहे। ई

[5] *सेंसस ऑफ़ इंडिया 2011, लैंगवेज* (नई दिल्ली : ऑफ़िस ऑफ़ द रजिस्ट्रार जनरल, 2011), पृ. 6.

तमाम बहस-मुबाहिसा, भोजपुरी के लेके संसद में होखे बाला बाद-बिबाद-संबाद के सिलसिलेबार इतिहास एही किताब में पढ़े के मिली।

संसद में भोजपुरी के लेके होखल चरचा के लेके लिखल ई किताब लोक सभा आ राज्य सभा के बहसन के दस्ताबेज पे आधारित बा। ई सगरी बहस ऑनलाइन मौजूद बाड़ीं सऽ। एकरा ख़ातिर हम संसद सचिवालय के आभारी बाड़ीं। किताब में दिहल सगरी तसबीर डिजिटल संसद पोर्टल से लिहल गइल बाड़ीं सऽ, एकरो ख़ातिर हम संसद सचिवालय के आभारी हईं।

इ किताब सर्बाधिकार (कॉपीराइट) से मुक्त बा। एकरा के छापे, बाँटे भा ऑनलाइन पोर्टल आ केवनो सोशल मीडिया पे साझा करे ख़ातिर रउआँ सभ स्वतंत्र बानीं। एह ख़ातिर लेखक के अनुमति लिहल ज़रूरी नइखे। हँ, एतना निबेदन जरुर बा कि ई किताब पढ़ के रउआँ सभ आपन प्रतिकिरिया देब जा। ई किताब भोजपुरी भासा के संघर्स के इतिहास के एगो जरुरी अध्याय से पाठक लो के रूबरू कराइ, अइसन हमार उमेद बा। भोजपुरी अस्मिता के संघर्स यात्रा के जाने-समझे में ई किताब तनिको काम आ सकी, त लागी कि हमार मेहनत सार्थक हो गइल।

जय भोजपुरी! जय भोजपुरिया समाज!

- शुभनीत कौशिक

संबिधान सभा आ अस्थायी संसद में भोजपुरी

दिसम्बर 1946 में कैबिनेट मिसन के योजना के मुताबिक़ संबिधान सभा के गठन होखल। ई संबिधान सभा भारत के संबिधान बनवला के काम ओही घरी सुरु क दिहल। संबिधान सभा के अध्यच्छता डॉ. राजेंदर परसाद करत रहलीं आ प्रारूप समिति के अध्यच्छ रहलें डॉ. भीमराव अम्बेडकर। संबिधान सभा के सोझा संघ-राज्य सम्बन्ध लेखा तमाम मुद्दा रहलन सऽ। आ ओही तमाम मुद्दन में एगो भासा के मुद्दा सामिल रहे। भासा के ई मसला बड़ा पेचीदा रहे आ संबिधान सभा के मेंबरन में एही मुद्दा के लेके मतभेद होखला के पूरा सम्भावना रहे। एही ख़ातिर समझदारी से काम लेके संबिधान सभा भासा के मसला के आख़िरी बखत ख़ातिर छोड़ दिहले रहे। कुल्ही अहम मसला पे जब बिचार हो गइल तऽ आख़िरकार सितम्बर 1949 में संबिधान सभा में भासा के मुद्दा पे चरचा शुरू होखल।[6]

सितम्बर 1949 में जे घरी संबिधान सभा में भासा के सबाल पे बहस होखत रहे, ओही घरी हिंदी के संगे भोजपुरियो के जिकिर भइल। 13 सितम्बर 1949 के भासा के सबाल पे होत बहस में हिस्सा लेवत अलगू राय सास्तरी हिंदी के संगे भोजपुरी, मैथिली, ब्रज भासा के चरचा कइलें। आ कहलें कि हिंदी के भंडार ई सगरी भासन से मिलिके बनल बाटे। इहे बात संबिधान सभा में अगिला दिने डॉ. रघुबीर आगे बढ़वलें। उहाँ के कहलें कि 'साहितिक हिंदी के आधार बंगाल के सीमा से लेके पंजाब के सीमा ले, आ

[6] संबिधान सभा में होखल बहसन के मुद्दा आ आधुनिक भारत ख़ातिर उ सगरी बहसन के महत्त्व के पड़ताल ख़ातिर देखीं, ग्रेनविल ऑस्टिन, *द इंडियन कान्स्टीट्यूशन कॉर्नरस्टोन ऑफ ए नैशन* (नई दिल्ली: ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966[2000]).

नेपाल के सीमा से लेके गुजरात के सीमा ले फइलल बोलियन में बाटे। आ इहे कारन बाटे कि इनवरसिटी के इंतिहान ख़ातिर हिंदी के कोर्स में राजपूताना के पुरान भासा, डिंगल, अबधी, ब्रज आ भोजपुरी सगरी सामिल बाटे। बाकिर उर्दू के मामिला में अइसन नईखे। उर्दू साहित के कोर्स में हिंदुस्तान के बोलियन के जगह ना मिलेले।'

इहवाँ ई जान लेवल जाव कि भारत के संबिधान में भासा सम्बन्धी का पराबधान दिहल गइल बा। सबसे पहिला बात तऽ ई बा कि मौलिक अधिकार के अंतर्गत संबिधान के अनुच्छेद 29 अल्पसंख्यकन के भासा, लिपि आ संसकिरति के संरच्छन के अधिकार के पराबधान करेला। आ एकरा संगे अनुच्छेद 30 पराबधान करेला कि भासा भा धर्म के अधार पे अल्पसंख्यक तबका के आपन रुचि के हिसाब से इस्कूल, कॉलेज बनवला आ ओकर प्रसासन के अधिकार होखी। ई तऽ भइल मौलिक अधिकार के बात। एकरा अलावा संबिधान के भाग सतरह में भासा से जुड़ल पराबधान दिहल गइल बा। एही भाग में संघ के भासा, प्रादेसिक भासा, सुप्रीम कोरट आ हाइ कोरट के भासा से जुड़ल परबधान आ कुछ खास निरदेस दिहल गइल बाड़ें सऽ।

संबिधान के अनुच्छेद 343 (1) कहेला कि संघ के राजभाषा हिंदी आ लिपि देवनागरी होखी। एही अनुच्छेद के खंड (2) में संबिधान के लागू होखला से पंदरह बरस ले सासकीय काम-काज में अँग़रेजी के इस्तेमाल के पराबधान बा। एकरा अगिला अनुच्छेद में रास्टपति के आदेस से एगो भासा आयोग बनवला के पराबधान बा। संबिधान के भाग सतरह में प्रादेसिक भासा से जुड़ल तीन गो अनुच्छेद (345, 346, 347) बाड़ें सऽ। एही अनुच्छेदन में राज्य के राजभासा के लेके पराबधान तऽ बटले बा, ओकरा

संगे दु गो राज्यन के बीचे भा राज्य आ संघ के बीचे होखे बाला चिट्ठी-पतरी के बेवहार से जुड़ल पराबधानो दिहल बा। अनुच्छेद 347 बतावेला कि जो केवनो राज्य में ओही राज्य के आबादी के ठीक-ठाक हिस्सा क भासा के राज्य से मान्यता दिहला के माँग उठेले, तऽ रास्टपति ओकरा पे बिचार करिहें आ उ माँग उहाँ के ठीक लागी त उहाँ के ओही भासा के सासकीय दर्जा दिहला के निरदेस दे सकेलें।

सुप्रीम कोरट आ हाइ कोरट के भासा से जुड़ल अनुच्छेद 348 साफ़े कहेला कि सुप्रीम कोरट आ सगरी हाइ कोरट के भासा अंगरेज़ी होखी। आ एकरा संगे संसद आ सगरी राज्यन के बिधान सभा में बने बाला सगरी क़ानून आ उहवाँ पेस होखे बाला मय बिधेयक, आदेस, नियम-विनियम अंगरेज़ी में होखिहें सऽ। एही पराबधानन के संगे भाग सतरह में भासा से जुड़ल कुछ खास निरदेसो दिहल बा। अनुच्छेद 350 क के मुताबिक़ सगरी राज्य आ स्थानीय सासन भासाई अल्पसंख्यक तबका के लइका-लइकिन के पराइमरी ले ओकनीं के मातृभासा में पढ़वला के कोसिस करिहें। आ एकरा ठीक बाद अनुच्छेद 350 (ख) पराबधान करेला कि रास्टपति भासाई अल्पसंख्यक तबका ख़ातिर एगो खास अधिकारी नियुक्त करिहें। जेकर काम होखी भासाई अल्पसंख्यक तबका ख़ातिर संबिधान के पराबधान के लागू होखला के जाँच करल आ ओकर रपट रास्टपति के भेजल। आ रास्टपति उ मय रपट के संसद के दुनो सदन के सोझा रखवइहें आ ओही राज्य के सरकार के भेजिहें।

भाग सतरह के अंतिम अनुच्छेद बा - अनुच्छेद 351। जेकरा में हिंदी भासा के बिकास ख़ातिर पराबधान बा। ई अनुच्छेद कहेला कि संघ हिंदी भासा के बिकास आ ओकर प्रसार ख़ातिर ज़िम्मेदार होखी। जेकरा से हिंदी भारत के मिलल-जुलल संसकिरती के जाहिर कइला के माध्यम बने। ई अनुच्छेद इहो पराबधान

करेला कि हिंदुस्तानी आ संबिधान के अठवाँ अनुसुची में सामिल भारत के दोसर भासन में इस्तेमाल होखे बाला रूप, सैली आ पद के हिंदी अपना में समाहित करी।

संबिधान सभा संबिधान के अठवाँ अनुसुची में चौदह गो भासा रखले रहे। ई भासा रहलीं सऽ : असमिया, बांग्ला, कन्नड़, गुजराती, हिंदी, मलयालम, मराठी, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगु आ उर्दू। अप्रैल 1967 में एकइसवाँ संबिधान संसोधन कइके सिंधी के पंद्रहवाँ भासा के रूप में अठवाँ अनुसुची में राखल गइल। ओकरा पच्चीस साल बाद 1992 में एकहत्तरवाँ संबिधान संसोधन से कोंकणी, मणिपुरी आ नेपाली के अठवाँ अनुसुची में जगह मिलल। आ साल 2004 में बानबेवाँ संबिधान संसोधन से बोडो, संथाली, डोगरी आ मैथिली के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइल गइल। ए घरी अठवाँ अनुसुची में कुल बाइस भासा बाड़ीं सऽ।

26 जनबरी 1950 के भारत के गणतंत्र बनला के बाद संबिधान सभा अस्थायी संसद में तब्दील हो गइल। आ ई अस्थायी संसद संबिधान के मुताबिक़ दुनो सदन (लोक सभा आ राज्य सभा) के ज़िम्मेदारी निभवलस। अस्थायी संसद 28 जनबरी 1950 से लेके 5 मार्च 1952 ले काम कइलस। जबले कि 1952 में पहिलका आम चुनाव के बाद संसद के दुनो सदन ना बनल रहलें सऽ। एही अस्थायी संसद में रेडियो से होखे वाला प्रसारण आ भोजपुरी के लेके एगो सबाल खुदीराम महतो मार्च 1950 में उठवलें। उहाँ के सूचना आ प्रसारण मंतरी से पूछलें कि आकासबानी के पटना स्टेसन से केवन-केवन भासन में प्रसारण होखेला आ का ओहिजा से आदिबासी भासन में प्रसारण होखेला। भोजपुरी आ कुड़माली (कुरमाली)

लेखा भासन के पटना सेंटर से प्रसारण में जगह दिहल जात बा कि ना।[7] उहाँ के एही सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी रंगनाथ रामचंद्र दिबाकर बतवलें कि पटना इस्टेसन से हिंदी आ अंगरेज़ी के अलावा हिंदी के बोलियन भोजपुरी, मैथिली, मगही में प्रसारण होखेला। आ पटना से संथाली, ओराँव, मुंडा आ हो भासा के गीतन के प्रसारणो होखेला।

संबिधान सभा आ अस्थायी संसद में भोजपुरी के लेके का चरचा होखल, संबिधान में भासा के लेके का पराबधान बाड़ें सऽ, एकरा पड़ताल हमनीं के एही अध्याय में कइनीं जा। संसद के दुनो सदन (लोक सभा आ राज्य सभा) में भोजपुरी भासा के लेके का बहस होखलीं सऽ, अगिला अध्यायन में हमनीं के एकर पड़ताल करब जा।

[7] कुड़माली (कुरमाली) भासा बंगाल, झारखंड आ ओडिसा में बोलल जाले। एकरा के 'पंचपरगनियो' कहल जाला। खुदीराम महतो कुड़माली भासा पे खुदे एगो किताब सम्पादित कइले रहलें, जेकर नाम बा 'कुड़माली भासातत्त्व'।

लोक सभा में भोजपुरी

पहिली लोक सभा आ आगे

साल 1952 में भारत के पहिला आम चुनाव सम्पन्न होखल। एकरा बाद 13 मई 1952 के भारत के पहिली लोक सभा के गठन होखल आ ओही दिने भारत के कोना-कोना से चुन के आइल सांसद लो सपथ लिहल आ लोक सभा ओही दिने से आपन काम सुरु कय दिहल। एकरा चार बरिस बीतला के बाद जुलाई 1956 में लोक सभा में शाहाबाद दक्खिन (बक्सर) (बिहार) के सांसद डॉ. राम सुभग सिंह बंगाल में भोजपुरिया समाज क पीड़ा संसद में उठवलें।[8] ओही घरी लोक सभा में बिहार आ पच्छिम बंगाल क इलाक़ा के अदला-बदली से जुड़ल बिधेयक पे चरचा होखत रहे। ओही बिधेयक पे बिचार करे ख़ातिर एगो संजुक्त कमेटी बनवला के परस्ताव आइल रहे। ओही कमेटी में राम सुभगो सिंह रहलें, बाकिर उहाँ के कहनाम रहे कि एही कमेटी में बंगाल के भोजपुरिया समाज के केवनो प्रतिनिधि होखे के चाहीं। उहाँ के कहलें कि बंगाल में एही बखत पचास लाख भोजपुरिया लो बाटे आ एही ख़ातिर ई जरुरी बा कि ओ भोजपुरिया समाज के प्रतिनिधि ई संजुक्त कमेटी में होखे। जे बंगाल के भोजपुरिया समाज के पीड़ा आ ओकर माँग के सभका सोझा राख सके। उहाँ के कहनाम रहे कि बंगाल में भोजपुरिया लो दबावल जात बाड़ें। भोजपुरिया समाज के लइका-लइकिन ख़ातिर उहवाँ ना त केवनो इस्कूल बाटे, जेमे

[8] लोक सभा में होखल बहसन ख़ातिर देखीं : https://eparlib.nic.in

भोजपुरी पढ़ावल जात होखे आ ना पच्छिम बंगाल के एसेंबली में भोजपुरिया समाज क केवनो प्रतिनिधि बाटे।

अगस्त 1956 में बिहार आ बंगाल बिधेयक पे चरचा करत घरी कम्युनिस्ट पार्टी के सांसद हीरेन मुखर्जी राम सुभग सिंह के कहल बात इयाद दियवलें आ कहलें कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन, जे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य रहलें, भोजपुरी भासा में नाटक लिखले रहलें। हीरेन मुखर्जी इहो कहलें कि 'जो साँचो केहु आदिबासी, भोजपुरिया आ मैथिल लो ख़ातिर सोचत बाटे तऽ ई बहुत जरुरी बा कि उ हालात के सच्चाई से सामना करे, आ आम लोगन के मातृभासा के प्रसासन के भासा बने, प्रसासन आ सरकार के आम लो के संसकिरती से जोड़ल जाव, तबे लोकतंत्र सफल होखी।'

धियान राखे के चाहीं कि एही बहस से तीन बरिस पहिले साल 1953 में सैयद फ़ज़ल अली के अध्यच्छता में राज्य पुनर्गठन कमीसन बनल रहे। एही कमीसन में एच.एन. कुंज़रु आ के.एम. पणिक्कर लेखा लो मेम्बर रहे। कमीसन आपन रपट में कहले रहे कि राज्य पुनर्गठन के सबाल पे बिचार करत घरी चार गो खास बातन के धियान राखे के चाहीं : भारत के एकता आ सुरच्छा, भासाई आ सांसकिरतिक कारक, आर्थिक लिहाज़ से बेवहारिक आ प्रसासनिक कार्जछमता के सबाल, आ रास्टीय बिकास। कमीसन आपन रपट में ई बात ज़ोर देके कहले रहे कि राज्य के पुनर्गठन खाली भासा या संसकिरती के आधार पे ना होखे के चाहीं, बलुक ऊपर बतावल चारो बातन के धियान में राखे के चाहीं।

ओही घरी साल 1955 में बी.जी. खेर के अध्यच्छता में राजभासा कमीसन बनल रहे। सुनीति कुमार चटर्जी, अमरनाथ झा, हज़ारी प्रसाद द्विबेदी, रामधारी सिंह दिनकर, बालकिसुन सर्मा 'नबीन', बाबू राम

सक्सेना लेखा लो एही कमीसन के मेम्बर रहलें। जुलाई 1956 में ई कमीसन आपन रपट दिहलस। कमीसन आपन रपट में भासा नीति के लचीला बनवला पे ज़ोर दिहलस। कमीसन के सुझाब रहे कि भारत लेखा बहुभासिक देस में हर भासाई इलाक़ा के लोगन में बहुभासिक प्रबृत्ति के बढ़ावा देबे के चाहीं आ एकरा ख़ातिर इस्कूल, कॉलेज आ इनवरसिटी में परबधान करे के चाहीं।

साठ के दसक में बिहार आ उत्तर परदेस के कइगो सांसद लो के संसद में दिहल भासन पढ़त अइसन लागेला कि उ लो बुझत रहे कि जो भोजपुरी, मगही लेखा भासा के बात उ लो संसद में उठाई, ओही भासन के बिकास ख़ातिर अनुदान माँगी तऽ ई बात हिंदी के हक़ में ना होखी। मसलन, अप्रैल 1967 में जब लोक सभा में भासा से जुड़ल एगो संबिधान संसोधन के परस्ताव पे बहस होत रहे तऽ गोपालगंज के सांसद द्वारकानाथ तिबारी कहलें कि ‘हमनी के इहाँ बिहार में कइगो भासा बाड़ीं सऽ। भोजपुरी बिया, मगधी बा एक-एक डेढ़-डेढ़ करोड़ लोग ओकनीं के बोले बाला बाड़ें। बाकिर हमनी के तऽ कभो ई ना कहनीं जा कि ओकनी के डेवलपमेंट ख़ातिर सरकार पइसा देवे। काहें कि हमनी के तय कइले बानीं जा कि उ सभ भासन के किनारे राखिके हमनी के हिंदी के मदद करब जा।’

इहो बात धियान देबे जोग बा कि संसद में भोजपुरी में भासन दिहला के अनुमति ना पहिले रहे, ना ए घरी बा। एच.पी. सिंह लेखा सांसद लो जब मार्च 1999 में लोक सभा में भोजपुरी में आपन बात राखल चाहल, तऽ नियम के हबाला देके ओही लो के चुप करा दिहल गइल आ भोजपुरी में कहल बात के संसद के रिकॉर्ड से बहरी क दिहल गइल। ओही घरी उहाँ के कहले रहलीं ‘महोदय, हमार कहनाम बा

जे तरे आउरी भासन के अनुबाद हो रहल बा, भोजपुरियो के अनुबाद होखे।' बाकिर उप-सभापति उहाँ के नियम के हबाला देके बइठे के कह दिहलीं।

अठवाँ अनुसुची आ भोजपुरी

संबिधान के अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी के सामिल कइला ख़ातिर बखत-बखत पे संसद में माँग उठत रहल बा। एही दिसा में सुरुआती आ महत्त्व के प्रयास सत्तर के दसक में सुरु होखल। अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी के सामिल कइला के माँग कई ढंग से सांसद लो उठावल। कुछ लो निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लोक सभा में पेस कइलें, तऽ कुछ लो संसद के धियान खींचे बाला पराबधान के मार्फ़त भोजपुरी के माँग उठवलें आ कुछ लो भासा के सबाल के लेके होखत केवनो चरचा में भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में जोड़ला के माँग रखलें।

जुलाई 1971 में जयनगर के सांसद भोगेंदर झा निजी मेम्बर के हैसियत से अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी, मैथिली आ राजस्थानी के सामिल करे ख़ातिर संबिधान संसोधन बिधेयक लोक सभा में पेस कइलें। बिधेयक पेस करत घरी उहाँ के ई तीनहुँ भासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल करे ख़ातिर बड़ा तर्कसंगत भासन दिहलें। भोजपुरी, मैथिली आ राजस्थानी के प्राचीनता, ओकनीं के साहित भंडार के चरचा तऽ उहाँ के कइबे करलीं। एकरा साथे उहाँ के इहो बात ज़ोर देके कहलीं कि ई तीनहुँ भासा के अठवाँ अनुसुची में जगह दिहला से हिंदी देस के समपरक भासा के रूप में आउरी मज़बूत होखी आ ई क़दम देस के एकता के आउरी मज़बूत करी। उहाँ के कहलीं कि मातृभासा आ जनभासा के संबिधान में जगह दिहला से लोकतंत्र मज़बूत होखी। कोरट-कचहरी आ इस्कूल के भासा के सबालो उहाँ के उठवलीं।

मैथिली बोले बाला लोगन के आँकड़ा बतावत घरी उहाँ के जनगणना में दिहल आँकड़ा के कमियो पे अंगुरी उठवलीं।

एही तरे देखल जाव तऽ भोगेंदर झा खाली संबिधान संसोधन के बिधेयक ना लियइलें बलुक उहाँ के भोजपुरी के लेके तमाम जरुरी मुद्दा के संसद में उठावे के बेमिसाल काम कइलें।

ओही बिधेयक के समर्थन डॉ. कैलास (बम्बई), अमृत नाहटा (बाड़मेर), बिभूति मिसिर (मोतीहारी), दसरथ देब (त्रिपुरा), रानेन सेन (बारसाट), डॉ. कर्णी सिंह (बीकानेर), हुकमचंद कछवाय (मुरेना) लेखा सांसद लो कइलें। पाली के सांसद मूलचंद डागा ओही बहस में हिस्सा लिहलें आ एही बिधेयक के लेके कुछ सबाल उठवलें। उहाँ के पूछलें कि ई तीनों भासा जहवाँ बोलल जालीं सऽ, उहवाँ के राज्य सरकार ई भासन के बढ़ावा देबे ख़ातिर का क़दम उठवलें बाड़ीं सऽ। जाहिर बा कि ई सबाल के दरकिनार ना कइल जा सकेला। संबिधान में संसोधन आ अठवाँ अनुसुची के बात तऽ लोक सभा में होत रहे, बाकिर उत्तर परदेस आ बिहार के सरकार भोजपुरी ख़ातिर का करत रहलीं ह सऽ आ करे बाला बाड़ीं सऽ, इहो सबाल ओही सरकारन से जरुर पूछल जाए के चाहीं। ओही घरी लोक सभा में होखल चरचा में बुंदेलखंडी, मालवी, संथाली, नेपाली, कोंकणी, मणिपुरीयो के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के बात उठल।

सरकार के पच्छ राखत क़ानून आ न्याय मंतरी एच.आर. गोखले तरह-तरह के तर्क देके भोगेंदर झा के समझावे लागलें कि उ आपन ई बिधेयक बापिस ले लेंव। मंतरी जी संबिधान के भासा से जुड़ल अनुच्छेद आ पराबधान के चरचा तऽ कइलीं, बाकिर भोजपुरी, मैथिली आ राजस्थानी के अठवाँ अनुसुची में

सामिल करे ख़ातिर केवनो समय-सीमा ना दिहलीं। एही बिधेयक के लेके उहाँ के एतने कहलीं कि ‘सरकार सदन के बिचार पे पूरा धियान दिही। सरकार के आउरी भासन के माँगो पे बिचार करे के होखी आ सही बखत पे सरकार ई तीनहुँ [भोजपुरी, मैथिली आ राजस्थानी] आ दोसर भासन के माँग पे जरुर अमल करी।’ बाकिर उ “सही बखत” कब आई एकर केवनो साफ़ जबाब उहाँ के ना दिहलीं।

5 अगस्त 1971 के जब लोक सभा में ई संबिधान संसोधन बिधेयक के मुद्दा भोगेंदर झा फेरु उठवलें, तऽ कानपुर के सांसद एस.एम. बनर्जी ओकरा पे स्थगन परस्ताव लियइलें। ओही घरी संसदीय मंतरी राज बहादुर लोक सभा में कहलें कि ‘सरकार एही बिधेयक में उठावल गइल मुद्दा पे सरकार गम्भीरता से बिचार करी, जइसन कि गोखले जी 23 जुलाई 1971 के कहलें रहलीं।’ एही तरे सांसद एस.एम. बनर्जी के स्थगन परस्ताव लोक सभा में पारित हो गइल, आ भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग ठंडा बस्ता में डाल दिहल गइल।

बाकिर अगिला साल 1972 में भोगेंदर झा फेरु एक बार भोजपुरी के माँग उठवलें, आ उहाँ के एगो आउरी संबिधान संसोधन बिधेयक निजी मेम्बर के हैसियत से लियवलें। एही बिधेयक में अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी के संगे नेपाली भासो के सामिल कइला के परस्ताव रहे। एही क्रम में जब भासाई अल्पसंख्यकन के कमिसनर के बारहवाँ रपट (1969-1970) लोक सभा में पेस भइल, तऽ भोगेंदर झा ओकरा से जुड़ल परस्ताव में दुगो बिंदु जोड़ला के सुझाव रखलें। ई दुगो बिंदु रहे : पहिला, ‘एही सदन के मत बा कि सरकार भासाई अल्पसंख्यकन के भासाई आ सांसकिरतिक बिकास के बढ़ावे आ ओकरा के सुनिस्चित कइला में बिफल रहल बिया। आ दोसर, ‘एही सदन के मत बा कि

सरकार संबिधान के अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी, मैथिली, नेपाली आ राजस्थानी भासन के सामिल कइला के माँग नकार दिहले बिया।'

सत्तर के दसक में चंद्रिका परसाद, सी.के. चंद्रप्पन लेखा सांसद लो भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची सामिल कइला के माँग लोक सभा में उठवलें। अप्रैल 1974 में बलिया के सांसद चंद्रिका परसाद भोजपुरी के उपेच्छा के सबाल संसद में उठवलें। उहाँ के कहलें कि राज भासा आयोग हिंदी आ भोजपुरी के उपेच्छा कर रहल बाटे। उहाँ के संबिधान के भोजपुरी अनुबाद कइला के माँग उठवलीं आ कहलीं कि आठ करोड़ लो भोजपुरी बोलेलें बाकिर अबहीं ले संबिधान के भोजपुरी अनुबाद नइखे भइल। एकरा संगे उहाँ के राजभासा आयोग में भोजपुरी भासा के प्रतिनिधियो के सामिल कइला के माँग उठवलीं।

अप्रैल 1975 में सी.के. चंद्रप्पन निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लियइलें। एही बिधेयक में संबिधान के अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी, कोंकणी, मणिपुरी आ राजस्थानी भासा के सामिल कइला के परस्ताव रहे। एकरा पाँच साल बाद भोगेंदर झा फेरु भोजपुरी के माँग उठवलें। 1980 में उहाँ के एगो आउरी संबिधान संसोधन बिधेयक निजी मेम्बर के हैसियत से लियवलें। एही बिधेयक में संबिधान के अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी, मैथिली, मणिपुरी, संथाली के संगे नेपाली भासो के सामिल कइला के परस्ताव रहे। भोगेंदर झा संसद में भोजपुरी के मुद्दा लगातार उठावत रहलें। अप्रैल 1995 में रास्टपति के भासन पे होखत धन्यबाद परस्ताव के चरचा में हिस्सा लेत घरी भोगेंदर झा रास्टपति भासन में मैथिली, राजस्थानी आ भोजपुरी भासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के लेके केवनो जिकिर ना होखला के लेके परस्ताव लियइलें।

एकरा से पहिले साल 1986 में रास्टपति भासन के धन्यबाद परस्ताव पे होखत चरचा में हिस्सा लेत घरी बसीरहाट के सांसद इंद्रजीत गुप्ता एगो परस्ताव लियइलें कि ई जोड़ल जाव कि 'इ दुखद बाटे कि रास्टपति के भासन में नेपाली, मणिपुरी, मैथिली, संथाली आ भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के लेके केवनो जिकिर ना रहे।' नेपाली, मणिपुरी, मैथिली, संथाली, कोंकणी आ भोजपुरी के उपेच्छा के लेके अइसने एगो परस्ताव नालंदा के सांसद बिजय कुमार यादव फ़रबरी 1989 में लोक सभा में लियाइल रहलें।

एकरा साल भर पहिले मार्च 1988 में दार्जिलिंग के सांसद आनंद पाठक नेपाली, मणिपुरी, भोजपुरी, कोंकणी, डोगरी भासन के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग संसद में उठवले रहलें। ओही घरी आनंद पाठक आ नारायण चंद परासर संसद में सबाल पूछलें कि का केवनो भासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के अर्ज़ी राज्य सरकार, केवनो संगठन से केंद्र सरकार के मिलल बा। एही सबाल के जबाब देत घरी गृह मंतरी बूटा सिंह जेवन जानकारी दिहलें ओकरा मुताबिक़ साल 1984 में बिहार सरकार मैथिली आ भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के अनुरोध केंद्र सरकार से कइले रहे।

एकरा अगिला साल अगस्त 1990 में सांसद सत्यगोपाल मिसिर एगो संबिधान संसोधन बिधेयक निजी मेम्बर के हैसियत से लियवलें। एही बिधेयक में संबिधान के अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी, डोगरी, कोंकणी आ नेपाली भासा के सामिल कइला के परस्ताव रहे। नब्बे के दसक में छेदी पासवान (सासाराम), गिरिजा देबी (महाराजगंज) लेखा सांसद लो भोजपुरी के संबिधान के अठवाँ अनुसुची में

सामिल कइला के माँग उठवलें। 1997 में जब शत्रुघन परसाद सिंह पूछलें कि सरकार मैथिली आ भोजपुरी के संबिधान के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के लेके कब ले अंतिम फ़ैसला लिही। तऽ गृह राज्य मंतरी मोहम्मद मक़बूल डार बतवलें कि सचिब (राजभासा) के अध्यच्छता में एगो कमेटी बनल बा, जेवन अठवाँ अनुसुची में भासन के सामिल कइला के माँग पे बिचार करी आ एही ख़ातिर एगो कसौटी निर्धारित करी।

एकरा तीन साल बाद सन 2000 में महाराजगंज के सांसद प्रभुनाथ सिंह अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी के सामिल कइला ख़ातिर एगो संबिधान संसोधन बिधेयक निजी मेम्बर के हैसियत से लियवलें। आ दिसम्बर 2000 में प्रभुनाथ सिंह संसद में बिस्व भोजपुरी सम्मेलन में पारित परस्तावन के चरचा कइलें। बिस्व भोजपुरी सम्मेलन दिल्ली में नवम्बर 2000 में भइल रहे आ ओकर अध्यच्छता पुर्ब प्रधानमंतरी चंदरसेखर कइले रहलें। एही सम्मेलन में भोजपुरी के लेके तेरह गो परस्ताव पारित होखल जेकर जिकिर प्रभुनाथ सिंह आपन भासन में कइलें। ई परस्ताव रहलें सऽ : अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी के सामिल कइल जाव; भोजपुरी के साहित अकादमी के भासा सुची में जोड़ल जाव; दिल्ली में भोजपुरी भासा के बिकास ख़ातिर एगो भोजपुरी बिकास केंद्र बने; भोजपुरी इलाक़ा आ दोसर भासा के इलाकन के सामाजिक आ सांसकिरतिक संबाद ख़ातिर सुबिधा आ संसाधन के बेवस्था सरकार करे; बिहार आ उत्तर परदेस में राज्य सेबा आयोग के इंतिहान में भोजपुरी भासा के जगह दिहल जाव; भोजपुरी के नाम पे असलील साहित भा असलील गानन के कैसेट पे प्रतिबंध लागे; भोजपुरी इलाक़ा के पराइमरी आ सेकंडरी इस्कूलन में भोजपुरी भासा पढ़इला के बेवस्था होखे; जनगणना में भोजपुरी भासा के दर्ज़ कइल

जाव; भोजपुरी इलाक़ा के जेवना इनवरसिटी में भोजपुरी के पढ़ाई अब ले नइखे सुरु भइल, उहवाँ भोजपुरी के पढ़ाई होखे; भोजपुरी भासी इलाक़ा आ ओकर सांसकिरतिक बिकास ख़ातिर भारत सरकार अलगा से पैकेज दे। एही परस्तावन के समर्थन बिकरमगंज के सांसद कांति सिंह कइले रहलीं।

दिसम्बर 2002 में प्रभुनाथ सिंह संसद में फेरु भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग उठवलें। उहाँ के संसद में भोजपुरी भासा आ साहित के समृद्धि, भिखारी ठाकुर लेखा भोजपुरी सहित्यकारन के जिकिर कइलीं। एकरा संगे उहाँ के भोजपुरी के बिस्तार आ इस्कूल, कॉलेज आ इनवरसिटी में भोजपुरी के पढ़ाई-लिखाई, बिहार के भोजपुरी अकादमी लेखा संस्था, साहित अकादमी के सुरु कइल भोजपुरी सम्मान आ बिस्व भोजपुरी सम्मेलनो के चरचा कइनीं। उहाँ के पूछलीं कि अनुसुची में सामिल कइला के माँगन पे बिचार करे ख़ातिर जेवन कमीसन बनल रहे ओकर सिफ़ारिस का बाटे आ उ कबले लागू होखी। रामबिलास पासवान, रघुनाथ झा आ संगरूर के सांसद सिमरनजीत सिंह मान लेखा सांसद लो भोजपुरी के समर्थन कइलें। बाकिर ई अचरज के बात के भोजपुरी इलाक़ा बलिया के सांसद आ पुर्ब प्रधानमंतरी चंद्रशेखर कहलें कि उहाँ के ई माँग के समर्थन ना करेलीं। आ उनकर बिचार बा कि संसद में अइसन माँग उठावल आ सरकार के अइसन मामिला में अस्वासन दिहल ठीक नइखे। उहाँ के कहलें कि सरकार के आपन धियान हिंदी के बिकास पे लगावे के चाहीं आ जे लोग भोजपुरी आ बोलियन के माँग उठावत बा। ओही लो के आपन भासा आ बोली ख़ातिर काम करे के चाहीं। आख़िर में उहाँ के कहलीं कि प्रभुनाथ सिंह के चाहीं कि उ भोजपुरी के आगे बढ़वला ख़ातिर काम करें, बाकिर ओकरा के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग नत उठावें।

दिसम्बर 2003 में बोडो, संथाली, डोगरी आ मैथिली के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर संबिधान संसोधन के बिधेयक उप-प्रधानमंतरी आ गृह मंतरी लाल किसुन आडवाणी लोक सभा में पेस कइलें तऽ ओही घरी प्रभुनाथ सिंह, डॉ. बिक्रम सरकार आ रघुबंस परसाद सिंह लेखा सांसद लो भोजपुरी के संगे हो रहल उपेच्छा के सबाल संसद में उठवलें। प्रभुनाथ सिंह कहलें कि आजु जवन बिधेयक आइल बा ओकरा ख़ातिर प्रधानमंतरी जी के हम बधाई देत बानीं। आ हम जानल चाहत बानीं कि केवना आधार पे एही चार भासन के तऽ अठवाँ अनुसुची में जोड़ल जात बाऽ। बाकिर भोजपुरी जेकरा के बोले बाला लोगन के तादाद दुनिया भर में बीस करोड़ बाटे आ हिंदुस्तान में सोलह करोड़ बाटे ओकरा ख़ातिर अठवाँ अनुसुची में जगह नइखे। उ बिधेयक पारित होखल आ जनवरी 2004 में बोडो, संथाली, डोगरी आ मैथिली अठवाँ अनुसुची में सामिल हो गइलीं सऽ।

बता दिहल जाव कि सितम्बर 2003 में सीताकांत महापात्र के अध्यच्छता में एगो कमेटी बनुए, जेकर उद्देस रहे कि संबिधान के अठवाँ अनुसुची में आउरी भासन के सामिल कइला ख़ातिर मानक भा कसौटी बनावल। एह कमेटी में किसुनमूर्ति, बी.के. सर्मा, उर्दू के नामी-गिरामी बिद्वान गोपीचंद नारंग आ शमसुररहमान फ़ारूक़ी, बीरेन्द्रनाथ दत्त, सूरज भान सिंह आ उदय नारायण सिंह लेखा लो मेम्बर रहे। ई कमेटी 2004 में आपन रपट सरकार के दे दिहल आ तब से ई रपट बिचाराधीने बा। बता दिहल जाव कि एकरो ले पहिले 1996 में अठवाँ अनुसुची में भारतीय भासन के सामिल कइला ख़ातिर एगो आउरी कमेटी अशोक पाहवा, सचिव (राजभासा) के अध्यच्छता में बनल रहे।

2003 के बाद के सालन में रघुनाथ झा (बेतिया), योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर), सैलेंदर कुमार (चायल/कौसांबी), बैदनाथ परसाद महतो (बाल्मीकिनगर), जयपरकास अगरवाल (उत्तर पूरब दिल्ली), महाबल मिसिर (पच्छिम दिल्ली), संजय निरुपम (बम्बई उत्तर), सत्रुघन सिनहा, लेखा सांसद लो भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग उठवलें। सी.के. चंद्रप्पन तीस बरिस बाद फेरु साल 2005 में निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लियवलें। एही बिधेयक में संबिधान के अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी आ राजस्थानी भासा के सामिल कइला के परस्ताव रहे। फ़रबरी 2004 में योगी आदित्यनाथ भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग लोक सभा में उठवलें। आपन एही माँग में उहाँ के भोजपुरी के इतिहास आ भोजपुरी भासा के प्रसार, भोजपुरिया लोगन के तादाद के जिकिर त करबे कइलीं। ओकरा संगे उहाँ के भोजपुरी में संत साहित के परम्परा (चौरंगीनाथ, गोरखनाथ, भरथरी, कबीर, कमलदास, धरमदास, धरनीदास, पलटूदास, भीखासाहब) आ राहुल सांकृत्यायन, भगवतशरण उपाधिया, चतुरी चाचा लेखा साहितकारन के नामो लिहलीं। इहे माँग उहाँ के अगिला दस बरिस में संसद में कई बेर रखलीं।

दिसम्बर 2006 में प्रभुनाथ सिंह लोक सभा के धियान भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में जगह दिहला के ओर दियवलें। ओही घरी संसद में होखल चरचा में सैलेंदर कुमार, बिजय कुमार मल्होत्रा (दक्खिन दिल्ली), आलोक कुमार मेहता (समस्तीपुर), रासा सिंह रावत (अजमेर), सीताराम सिंह (शिवहर) लेखा सांसद लो भोजपुरी के समर्थन कइलें। ओही चरचा में उठल सबालन के जबाब देत गृह राज्य मंतरी श्रीप्रकास जायसवाल कहलें कि भोजपुरी आ राजस्थानी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग

ढेर बखत से उठ रहल बा। उहाँ के इहो बतवलें कि अक्टूबर 1996 में गृह मंतरालय सचिब (राजभासा) के अध्यच्छता में एगो उच्च स्तरीय कमेटी बनावल, जेकर उद्देस रहे अठवाँ अनुसुची में भासन के सामिल कइला के निस्चित कसौटी तय करल। उ कमेटी अप्रैल 1998 में आपन रपट सरकार के दिहलस आ अठवाँ अनुसुची में केवनो भासा के जोड़ला ख़ातिर सिफ़ारिस कइले कि : केवनो राज्य के एगो राजभासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइल जा सकेला; ओ भासा के ओही राज्य के ढेर लो बोलत होखे; ई भासा एगो अलग भासा होखे आ अठवाँ अनुसुची में सामिल केवनो दोसर भासा के बोली भा ओकरा से निकरल ना होखे; साहित अकादमी के मान्यता ओकरा के मिलल होखे; ओकरा में उच्च स्तर के साहित के बिकास भइल होखे। श्रीप्रकास जायसवाल कहलें कि ई सगरी कसौटी के आधार पे अठवाँ अनुसुची में आउरी भासा सामिल कइला के कार्रवाई सुरु हो गइल बिया। जब प्रभुनाथ सिंह आपन कई साल के अनुभव आ भोजपुरी के लेके एक के बाद एक सरकारन के ढुलमुल रवैया के हाल बतवलें आ पूछलें कि अभी एकरा में केतना बखत लागी। तऽ श्रीप्रकास जायसवाल कहलें कि उमेद बाटे कि अगिला सत्र में भोजपुरी आ राजस्थानी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर बिधेयक संसद में आई आ पारित होखी। बाकिर इतिहास गवाह बाटे कि बीस साल बीते जात बाटे बाकिर उ ‘अगिला सत्र’ ना आइल।

अगस्त 2007 में प्रभुनाथ सिंह गृह राज्य मंतरी के दिहल उ अस्वासन के इयाद फेरु लोक सभा में दियइलें। आ पूछलें कि कार्रवाई कहाँ ले आगे बढ़ल बिया। सैलेंदर कुमार, सैयद साहनवाज़ हुसैन (भागलपुर), रासा सिंह रावत लेखा सांसद लो प्रभुनाथ सिंह के बात के समर्थन दिहलें। ओही घरी लालू

परसाद यादव कहलें कि ‘हम सभनी के भोजपुरी भासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल ख़ातिर सोचत बाड़ीं जाऽ। गृह मंतरी जी से हमार बात भइल बिया। ई बिसय जल्दिये कैबिनेट में आइ आ ए अस्वासन पे कार्रवाई होखी। हम साँच-साँच बोलत बानीं, भोजपुरी सामिल होइके रही, एकरा में केवनो संदेह नइखे।’ छह महीना बीतला के बाद प्रभुनाथ सिंह संसद के धियान फेरु भोजपुरी के ओर खींचले आ पूछलें कि सेसन खतम होखे बाला बा बाकिर सरकार अबहीं ले भोजपुरी के लेके केवनो इस्टेटमेंट नइखे देले। बिजय कुमार मल्होत्रा, साहनवाज़ हुसैन, रघुनाथ झा उहाँ के माँग के समर्थन कइलें। ओही घरी संसदीय कार्य मंतरी प्रियरंजन दासमुंसी एतने भर कहलें कि सरकार एही मसला पे बिचार करत बिया आ भोजपुरी सरकार के प्राथमिकता में बाटे।

अप्रैल 2008 में एही मामिला पे सरकार के पच्छ राखत गृह मंतरी श्रीप्रकास जायसवाल कहलें कि अबहीं सिविल सेबा के मुख्य इंतिहान देत घरी कैंडिडेट अठवाँ अनुसुची में सामिल केवनो भासा में इंतिहान दे सकेला। बाकिर उहाँ के आगे जोड़लें कि संघ लोक सेबा आयोग के कहनाम बा कि अठवाँ अनुसुची के भासा आ कमीसन के इंतिहान के माध्यम बाला प्रावधान हटावे के चाहीं काहे कि कमीसन के अनुसुची में सामिल सगरी भासा में इंतिहान करवला में दिक़्क़त आ रहल बाटे। एही ख़ातिर अबहीं भोजपुरी आ राजस्थानी के अठवाँ अनुसुची के सामिल कइला के मसला पे तब ले इंतिज़ार करे के होखी जबले सरकार सिविल सेबा के इंतिहान के भासा के फ़ैसला ना कर ले। गृह मंतरी के दिहल ई इस्टेटमेंट जेकरा में संघ लोक सेबा आयोग के इंतिहान के भासा के लेके जिकिर रहे, उ दक्खिन के सांसदन में हलचल मचा दिहलस। माँग उठे लागल कि आयोग के मुख्य इंतिहान में अठवाँ अनुसुची में

सामिल केवनो भासा में इंतिहान दे सकला के जवन पराबधान बा उ केवनो हाल में बदलल ना जाए के चाहीं। काहें कि ई दक्खिन भारत के नौजवानन के संगे नाइंसाफ़ी होखी।

इनवरसिटी में भोजपुरी के पढ़ाईयो के लेके सबाल संसद में उठल। नवम्बर 2009 में सांसद ओमपरकास यादव इंदिरा गांधी नैसनल ओपन इनवरसिटी के भोजपुरी कोर्स के लेके सबाल पूछलें। एकरा जबाब में मानव संसाधन बिकास राज्य मंतरी डी. पुरंदेस्वरी बतवलीं कि इगनु भोजपुरी के आधार (फ़ाउंडेसन) कोर्स जुलाई 2009 से सुरु कइले बा। ओही साल जगदंबिका पाल आ रंजन परसाद यादव के संगे ओमपरकास यादव भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लियवलें। दिसम्बर 2009 में सांसद संजय निरुपम भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के पच्छ में माँग उठवलें। उहाँ के एही माँग के समर्थन जगदंबिका पाल, सैलेंदर कुमार, रेवती रमन सिंह, जयपरकास अगरवाल, सतपाल महाराज, महाबल मिसिर, किरती आज़ाद, मंगनी लाल मंडल, अर्जुन राम मेघवाल, हर्षवर्धन, पन्ना लाल पुनिया, कमल किसोर कमांडो, रमाशंकर राजभर, तूफ़ानी सरोज, महेस्वर हज़ारी, बिनय कुमार पांडेय, रघुबंस परसाद सिंह आ सुशीला सरोज लेखा सांसद लो कइले रहलें।

अगिला साल 2010 में जयपरकास अगरवाल आ 2011 में डॉ. अजय कुमार भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लियवलें। अगस्त 2010 में संजय निरुपम फेरु संसद के धियान भोजपुरी आ राजस्थानी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला की ओर खींचलें। ओही घरी होखल चरचा में संसद में जगदंबिका पाल आ रघुबंस

परसाद सिंह भोजपुरी के पुरज़ोर समर्थन कइलें आ कहलें कि सरकार जल्द से जल्द भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल करे। बाकिर गृह राज्य मंतरी अजय माकन फेरु खाली अस्वासन दिहलें कि सरकार भोजपुरी आ राजस्थानी के माँग पे बिचार कर रहल बिया।

साल 2012 में लोक सभा में भोजपुरी के लेके ज़ोरदार बहस होखल। एक हाली तऽ ओ घरी जब सांसद सतपाल महाराज कुमाऊँनी आ गढ़वाली भासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लियवलें। ओ घरी लोक सभा में हो रहल चरचा में रघुबंस परसाद सिंह, जयप्रकास अगरवाल, हुकुमदेव नारायण यादव, महाबल मिसिर आ जगदंबिका पाल भाग लिहलें आ भोजपुरी के पच्छ में माँग उठवलें। रघुबंस परसाद सिंह डॉ. राममनोहर लोहिया के सुरु कइल अंगरेज़ी हटाओ आंदोलन के ज़माना के ई नारा सदन के इयाद दियवलें।

अंगरेज़ी में काम न होगा, फिर से देस ग़ुलाम न होगा,

डॉ. लोहिया की अभिलासा, चले देस में अपनी भासा।

एकरा महीना भर बाद मई 2012 में भोजपुरी के मामिला फेरु लोक सभा में उठुवे, जेवना घरी डुमरियागंज के सांसद जगदंबिका पाल भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लियवलें। ओही घरी सदन में गृह मंतरी पी. चिदम्बरम मौजूद रहलें। उहाँ के आपन बात राखत घरी फेरु सीताकांत महापात्र कमेटी के रपट आ यूपीएससी के इंतिहान के भासा के मुद्दा उठवलें। आ आगे जोड़लें कि यूपीएससी एही सबाल के जाँच ख़ातिर एगो उच्च स्तरीय कमेटी बनइले रहुवे, जे आपन रपट कार्मिक आ प्रसिच्छन बिभाग के मार्च 2012 में सौंपले बा आ

ओपर बिचार चल रहल बा। बाकिर ए बेरी जगदंबिका पाल आ भोजपुरी के माँग उठावे बाला सांसद लो केवनो बहाना सुने के तइयार ना रहे। जगदंबिका पाल कहलें कि '2004 आ 2006 में भोजपुरी के सबाल उठल रहे। ओ घरी गृह मंतरी सिवराज पाटिल आ गृह राज्य मंतरी श्रीप्रकास जायसवाल अस्वासन दिहले रहलें कि हमनी के सरकार भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर बिधेयक जल्दिये ले आइ। बाकिर एतना बरस बीत गइल तबो भोजपुरी अठवाँ अनुसुची में सामिल ना होखल।' जगदंबिका पाल इहो कहलीं कि सरकार भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल करे, भले ओकरा के यूपीएससी के इंतिहान के भासा बनावे भा ना बनावे।

कौसांबी के सांसद सैलेंदर कुमार तऽ सीधे कहलें यूपीएससी के इंतिहान के भासा खाली एगो बहाना बा, असली मक़सद बा कि भोजपुरी के माँग के दरकिनार कर दिहल जाव। रघुबंस परसाद सिंह पूछलें कि का बजह बाटे कि बरस पे बरस बीत रहल बाटे बाकिर भोजपुरी के माँग नइखे सुनल जात। महाराजगंज के सांसद उमासंकर सिंह भोजपुरी भासा आ साहित के इतिहास, भोजपुरी व्याकरण के कुछ किताबिन आ भोजपुरी सबदकोसन के नाम गिनवलें। एकरा संगे उ वीर कुँवर सिंह इनवरसिटी, आरा, बिहार इनवरसिटी, मुज़फ़्फ़रपुर, नालंदा ओपन इनवरसिटी, जयपरकास इनवरसिटी, छपरा, बीएचयू के भोजपुरी केंद्र, इगनु, पूर्वांचल इनवरसिटी, जौनपुर आ गोरखपुर इनवरसिटी के नामो लिहलें जहवाँ भोजपुरी के कोर्स पढ़ावल जात रहे आ भोजपुरी में डिग्री दिहल जात रहे।

इ सभ सांसद लो के बात सुनला के बाद पी. चिदम्बरम कहलें कि भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के दिसा में कोसिस चल रहल बा आ सरकार जल्दिये फ़ैसला लिही। उहाँ के भोजपुरी

में कहलीं कि ‘हम रउआ सभके भावना समझऽतानि।’ बाकिर रघुबंस परसाद सिंह, उमासंकर सिंह, नीरज सेखर (बलिया), सैलेंदर कुमार आ रामकिसुन (चंदौली) लेखा सांसद लो एही जबाब से संतुस्ट ना रहे। उ लो के कहनाम रहे कि मंतरी जी ई साफ़ बतावें कि भोजपुरी के सामिल कइला में केतना बखत लागी। चिदम्बरम आख़िर में कहलें कि ‘सरकार दुनो रपट पे बिचार कइके फ़ैसला लिही आ मानसून सत्र में सरकार आपन फ़ैसला सुनाई।’

साल 2012 के बाद भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग उठावे बाला सांसद लो में जगदंबिका पाल, सैलेंदर कुमार, प्रभुनाथ सिंह, मीना सिंह (आरा), बीरेन्दर कुमार चौधरी (झंझारपुर), रमा देबी (सिवहर), अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर), डॉ. संजय जायसवाल (पच्छिम चम्पारन), रबिकिसन (गोरखपुर), दिनेस लाल यादव ‘निरहुआ’ (आज़मगढ़) लेखा लो रहे। साल 2014 में मातृभासा दिबस (21 फ़रबरी) के दिन प्रभुनाथ सिंह भोजपुरी के पच्छ में माँग उठवलें आ कहलें कि ‘आज भोजपुरीभासी लो खिसियाइल बाड़ें। काहेंकि भाजपा आ कांग्रेस ई दुनो पार्टी पचीस करोड़ भोजपुरी बोले बाला लोगन के भावना से बराबर खेलवाड़ कर रहल बाड़ीं सऽ।’ उहाँ के सरकार से अस्वासन मँगलीं बाकिर सरकार केवनो अस्वासनो देके तइयार ना रहे। साल 2015 में लोक सभा में जनार्दन सिंह सीगरीवाल (भोजपुरी आ मगही), अश्विनी कुमार चौबे (भोजपुरी आ अंगिका), सुनील कुमार सिंह (भोजपुरी, मगही, ओराँव आ राजस्थानी) के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर निजी मेम्बर के हैसियत से संबिधान संसोधन बिधेयक लियवलें।

जगदंबिका पाल लेखा कुछ सांसद लो लगातार भोजपुरी के पच्छ में सदन में माँग उठावल। मार्च 2020 में जगदंबिका पाल फेरु भोजपुरी के मामिला संसद में उठवलें। उहाँ के भोजपुरी के संगे राजस्थानी आ भोटी भासा के संबिधान के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग रखलीं। उहाँ के जबाब देत घरी संसदीय कार्य राज्य मंतरी अर्जुन राम मेघवाल कहलें कि 'जेवन बिषय जगदंबिका पाल जी उठवले बानीं, उ सरकार के धियान में बा। आ भोजपुरी, राजस्थानी आ भोटी तीनहुँ भासा के परस्ताव पे सकारात्मक कदम उठावल जात बा।' दिलचस्प बात बाटे कि अर्जुन राम मेघवाल खुदे संसद में राजस्थानी आ भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग कई बेर उठा चुकल रहलें बाकिर अब जब खुदे उ मंतरी हो गइलें, त उहो अस्वासन के भासा बोले लागल रहलें।

साहित अकादमी, संगीत नाटक अकादमी आ भोजपुरी

अठवाँ अनुसुची के सबाल के संगे भोजपुरी के बढ़ावा देवे आ भोजपुरी भासा आ साहित के बिकास ख़ातिर साहित अकादमी आ संगीत नाटक अकादमी लेखा संस्था का काम करत बाड़ीं सऽ एकरो के लेके संसद में सबाल उठल। मसलन, जून 1962 में महाराजगंज से कांग्रेस के सांसद डॉ. महादेब परसाद पूछलें कि भोजपुरी संगीत के संग्रह, संकलन आ संरच्छन ख़ातिर सरकार का करत बिया। एकरा जबाब में वैग्यानिक अनुसंधान आ संसकिरती मंतरी हुमायूँ कबीर बतवलें कि संगीत नाटक अकादमी देस के लोकगीतन के संग्रह, संकलन आ संरच्छन ख़ातिर एगो योजना चला रहल बिया, जेकरा में भोजपुरियो सामिल बाटे। संगीत नाटक अकादमी भोजपुरी गीतन के रिकॉर्डिंगो तइयार करत रहे एकरो जानकारी मंतरी जी दिहलें। साल भर बाद अगस्त 1963 महादेब परसाद भोजपुरी लोक नृत्य के लेके सबाल

उठवलें। उहाँ के पूछलें कि का भोजपुरी लोक नृत्यन पे केवनो डॉक्युमेंटरी (वृत्तचित्र) तइयार भइल बाटे। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण उपमंत्री शाम नाथ बतवलें कि भोजपुरी लोक नृत्यन पे केवनो डॉक्युमेंटरी अबले नइखे बनल। उहाँ के इहो बतवलीं कि लोक-नृत्यन पे कुछ डॉक्युमेंटरी जरुर बनल बाड़ीं सऽ, जइसे 'भारत के लोक-नृत्य' (1953), 'धरती की झंकार' (1957), 'मध्य परदेस के लोक-नृत्य' (1962), 'सौराष्ट्र के लोक-नृत्य' (1963)। बाकिर एमें केवनो भोजपुरिया इलाक़ा के लोक-नृत्य सामिल ना रहे।

भोजपुरी भासा के बढ़ावा देवे आ भोजपुरी साहित के छपला ख़ातिर सरकार का कर रहल बिया, ई सबाल साल 1982 में लोक सभा में असफ़ाक हुसैन उठवलें। उहाँ के एही सबाल के जबाब देत सूचना आ प्रसारण मंतरी आरिफ़ मोहम्मद खाँ बतवलें कि सूचना आ प्रसारण मंतरालय के अधीन प्रकासन बिभाग बाटे, बाकिर उ अंगरेज़ी आ संबिधान के अठवाँ अनुसुची में सामिल भासन के किताब छापेला आ भोजपुरी अठवाँ अनुसुची में सामिल नइखे। असफ़ाक हुसैन इहो पूछलें कि का सरकार भोजपुरी भासा के साहित ख़ातिर केवनो पुरस्कार दिहला पे बिचार कर रहल बाटे। एकरा जबाब में सिच्छा आ संसकिरती राज्य मंतरी शीला कौल बतवलीं कि संस्कृत, अरबी आ फ़ारसी के अलाबा सरकार आउरी केवनो भासा ख़ातिर पुरस्कार नइखे सुरु कइले।

एकरा अगिला साल 1983 में प्रो. नारायण चंद परासर संसद में पूछलें कि केवनो भासा के साहित अकादमी के परिसद केंगने मान्यता देवेले, ओकर कसौटी का बाटे। आ एही घरी साहित अकादमी केवनी भासन के मान्यता दिहला पे बिचार कर रहल बिया। उहाँ के जबाब देत सिच्छा आ संसकिरती

राज्य मंतरी शीला कौल बतवलीं कि केवनो भासा के मान्यता देवे ख़ातिर साहित अकादमी के परिसद पाँच गो कसौटी बनवले बिया। ई कसौटी बाड़ीं सऽ : पहिला, उ भासा स्वतंतर भासा बिया कि केवनो भासा के हिस्सा बिया। दोसर, एकर साहित्यिक परम्परा आ इतिहास में निरंतरता बाटे कि ना। तीसर, का बड़ तादाद में लोग एही भासा के इस्तेमाल साहित्यिक आ सांसकिरतिक अभिव्यक्ति ख़ातिर करेलें। चौथका, का ओही भासा के इलाक़ा में पड़े वाला केवनो राज्य से मान्यता मिलल बा आ केवनो इनवरसिटी में उ भासा बिसय लेखा पढ़ावल जात बिया भा पढ़वला के माध्यम बिया। आ पँचवाँ, ओही भासा के बोले वाला लोग के तादाद केतना बा आ ओकरा में साहित (कथा, कहानी, निबंध, पतिरिका) केतना सिरजल जात बाटे। उहाँ के इहो बतवलीं कि अकादमी एही घरी ख़ासी, अबधी, मगही, भोजपुरी आ लदाखी भासा के मान्यता दिहला पे बिचार कर रहल बिया।

अगस्त 2001 में प्रभुनाथ सिंह संसद में उधमपुर में होखे जात बाला भोजपुरी सम्मेलन के चरचा कइलें। एकरा संगे उहाँ के दिल्ली सरकार के भोजपुरी-मैथिली अकादमी बनवला के अस्वासन स्वागत कइलीं। अठवाँ अनुसुची आ साहित अकादमी के सबाल के संगे लोक सभा में जनगणना में भोजपुरी बोले बाला लो के तादाद के लेके सबाल उठल, जेकर चरचा हमनीं के अब करब जा।

जनगणना आ भोजपुरी

भोजपुरी बोले बाला लोगन के तादाद देस में केतना बा, भोजपुरिया लो केवन-केवन इलाक़ा में बाड़ें, ई सगरी मुद्दा के लेके एकरो के लेके सांसद लो सबाल उठवलें। मसलन, जून 1962 में डॉ. महादेब परसाद पूछलें कि अइसन लोगन के तादाद केतना बाटे जिनकर मातृभासा भोजपुरी बा। एकरा जबाब में

वैग्यानिक अनुसंधान आ संसकिरती मंतरी हुमायूँ कबीर बतवलें कि 1951 के जनगणना के मुताबिक़ भोजपुरी के मातृभासा बतावे बाला लोगन के तादाद 2164 बा। उहाँ के इहो कहलें कि 1961 के जनगणना के आँकड़ा अबहीं तइयार होत बा। एही जबाब से एतना त साफ़ बुझाताऽ कि या तऽ एही आँकड़ा में केवनो गड़बड़ रहे आ चाहे जनगणना में भोजपुरी बाला लोगन के मातृभासा बाला कॉलम में केवनो आउरी भासा दर्ज़ कइल जात रहे, काहे कि जेतना संख्या बतावल गइल ओतना लो त भोजपुरी इलाक़ा के दु-तीन गो गाँवो के मिला दिहल जाइ त आराम से हो जाइ। अचरज के बात इहो बा कि भोजपुरी इलाक़ा के सांसद लो एही संख्या के गड़बड़ी के लेके केवनो सबाल ओही घरी ना उठावल।

साल 1971 में जेवना घरी लोक सभा में भोगेंदर झा के पेस कइल बिधेयक पे चरचा होखत रहे, तवना घरी मंतरी एच.आर. गोखले भोजपुरी, मैथिली आ राजस्थानी के बोले बाला लो के संख्यो बतवलें रहलें। ई संख्या सच्चाई के तनी नज़दीक रहे आ 1951 के जनगणना के आँकड़ा लेखा साफ़े ग़लत ना रहे। एच.आर. गोखले बतवलें कि राजस्थानी बोले बाला लो के तादाद 1 करोड़ 49 लाख 30 हज़ार बाटे; बिहार आ उत्तर परदेस में मैथिली बोले बाला लो 49 लाख 85 हज़ार बाटे, आ बिहार में भोजपुरी बोले बाला लो 79 लाख 65 हज़ार बाड़ें।

1971 के जनगणना के लेके एगो सबाल रामावतार सास्तरी दिसम्बर 1973 में पूछलें। उहाँ के पूछलीं कि का 1971 के जनगणना में बिहारी भासा बोले बाला लोगन के तादाद क़रीब दु करोड़ बतावल गइल बिया आ का 'बिहारी' नाम के केवनो भासा भा बोली बिया? उहाँ के एही सबाल के जबाब में उप गृह मंतरी एफ़.एच. मोहसिन बतवलें कि 1971 के जनगणना के मुताबिक़ बिहारी भासा के आपन मातृभासा

बतावे वाला लो के तादाद 23,222 बाटे। बिहारी भासा के लेके उहाँ के कहलीं कि लिंगविस्टिक सर्वे के मुताबिक़ 'बिहारी' भासा बिहार में बोलल जाए बाला सगरी भासा ख़ातिर इस्तेमाल कइल गइल बा, जेमे मैथिली, भोजपुरी आ मगही प्रमुख भासा बाड़ीं सऽ। एही बर्गीकरण के मुताबिक़ (यानी बिहार के मय भासा बोले बाला मिलाके) उहाँ के 'बिहारी' भासा के बोले बाला के तादाद 2 करोड़ 97 लाख बतवलीं।

साल 1984 में संसद में भोगेंदर झा पूछलें कि का 1981 के जनगणना में बिहार में मैथिली, भोजपुरी, संथाली, बंगाली, हिंदी, उर्दू आ दोसर भासन के आपन मातृभासा बतावे बाला लो के ज़िलावार आँकड़ा इकट्ठा कइल गइल बा। एकरा जबाब में गृह राज्य मंतरी रामदुलारी सिनहा बतवलीं कि 1981 के जनगणना में हर आदमी ख़ातिर 'मातृभासा' आ दुगो आउरी भासा जे उ जानेला एगो अलगा परची पे दर्ज़ होखल आ समूचा घर में बोले जाय बाली भासा के घर के सभ लो ख़ातिर अलगा सूची में दर्ज़ कइल गइल। उहाँ के इहो बतवलीं कि एमें खाली घरे बाला परची के आँकड़ा ज़िलावार तइयार होखी, बाकिर ओकरो आँकड़ा अबहीं मौजूद नइखे।

एकरा कुछ साल बाद दिसम्बर 1991 में भोगेंदर झा संसद में फेरु मैथिली, भोजपुरी आ राजस्थानी के जनगणना के आँकड़ा के लेके सबाल पूछलें। उहाँ के एही सबाल के जबाब में गृह राज्य मंतरी एम.एम. जैकब बतवलें कि 1971 आ 1981 के जनगणना में मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी आ कुछ दोसर मातृभासन के हिंदी के अंतर्गत राखल गइल। जेकरा चलते एही भासन के अलगा से आँकड़ा जनगणना

में छपल नइखे। ई जानल दिलचस्प बाटे कि 1971 से पहिले 1951 आ 1961 के जनगणना में मैथिली के गणना भइल रहे बाकिर ओकरी बाद मैथिली के हिंदी के अंतर्गत राख दिहल गइल।

अब एकर तुलना फ़रबरी 2018 में राजीब प्रताप रुडी के पूछल सबाल के जबाब में गृह राज्य मंतरी हंसराज गंगाराम अहीर के दिहल आँकड़ा से कइल जाव त फ़रक साफ़ देखाई दिही।

जनगणना के बरस	**भोजपुरीभासी लो के संख्या**
1961	79,64,755
1971	1,43,40,690
1981	1,58,88,906
1991	2,31,02,050
2001	3,30,99,497

राजीब प्रताप रुडी मार्च 2018 में सबाल पूछलें कि दुनिया के दोसर देसन में भोजपुरी बोले बाला लोगन के तादाद केतना बाटे। एकरा जबाब में विदेस राज्य मंतरी एम.जे. अकबर बतवलें कि दुनिया के दोसर देसन में भोजपुरी बोले बाला लोगन के तादाद 28.5 लाख बाटे। हलांकी उहाँ के जेवन आँकड़ा संसद में दिहलीं, उ अधूरा रहे। काहे कि ओही आँकड़ा में खाली तीस देसन के नाम रहे आ उ आँकड़ा बिदेस मंतरालय कइसे तइयार कइले रहे, एकरा बिसय में केवनो जानकारी सदन में ना दिहल गइल। ओही आँकड़ा के मुताबिक़ दुनिया में अइसन देसन के संख्या 8 रहे, जहाँ भोजपुरी बोले बाला लो दस हज़ार

भा ओकरा से अधिका रहलें। ई देस रहलें सऽ : नेपाल (15 लाख 84 हज़ार), मारीशस (4 लाख 10 हज़ार), म्यांमार (3 लाख), सूरीनाम (2 लाख 37 हज़ार), नीदरलैंड (2 लाख), ओमान (35 हज़ार), क़तर (20 हज़ार), बहरीन (12 हज़ार)।

भोजपुरी : बोली भा भासा?

आज़ादी के बाद क सुरुआती दउर में भोजपुरी के हिंदी के एगो बोली भर बतावल जात रहे। ख़ासकर मंतरी लो के जबाब में तऽ भोजपुरी के बोलिये बतावल जाव आ कछु सांसदो के भासन आ सबालो में भोजपुरी के बोलिये कहल जाव भासा ना। दुसरकी लोक सभा में अगस्त 1957 में ग़ाज़ीपुर के सांसद सरजू पांड़े भोजपुरी के लेके सबाल पूछलें। उहाँ के पूछलें कि उत्तर परदेस के केवना इलाकन में भोजपुरी बोले बाला लो के तादाद ढेर बा आ का सरकार भोजपुरी लेखा भासन के बिकास ख़ातिर केवनो योजना चला रहल बिया? उहाँ के एही सबाल के जबाब में सिच्छा आ वैग्यानिक गवेसना राज्य मंतरी कालूलाल श्रीमाली जेवन आँकड़ा दिहले उ अचरज में डाले वाला रहे। उहाँ के कहलें कि उत्तर परदेस के केवनो इलाक़ा में भोजपुरी बोले बाला लोगन के तादाद ढेर नईखे काहेकि मय उत्तर परदेस मिलाके भोजपुरी बोले बाला लो खाली 260 बाड़ें। दोसरका सबाल के जबाब में उहाँ के कहलें कि 'भोजपुरी खाली हिंदी के एगो बोली बिया। हिंदी के बोलियन के बिकास हिंदी भासा आ साहित के प्रसार आ बिकास योजना से बहरे के चीज़ बिया।'

मंतरी जी के एही जबाब में भोजपुरी के उपेच्छा के भाव साफे दिखाई देताऽ। ई कहल कि उत्तर परदेस में खाली 260 लो भोजपुरी बोलेला समझ से परे रहे। इहो धियान देबे के बात बा कि जहवाँ सरजू पांड़े

आपन सबाल में भोजपुरी ख़ातिर भासा के इस्तेमाल कइले रहलें, ओहिजें श्रीमाली अपना जबाब में भोजपुरी के हिंदी के एगो बोली भर बतवलें।

1967 में भोजपुरी भासा के बिस्तार के लेके अइसने एगो सबाल जब मृत्युंजय परसाद पूछलें कि का भोजपुरी पूरबी उत्तर परदेस आ बिहार में सभका ले ढेर बोलल जाए बाला **भासा** बिया। त ओनकरा एही सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी बतवलें कि भोजपुरी पच्छिम आ उत्तर-पच्छिम बिहार आ पूरबी उत्तर परदेस के **बोली** बिया, आ एकरा अलावा उत्तर, उत्तर-पूरब आ मध्य बिहार में मैथिली आ मगही बोली बोलल जालीं सऽ। साफ़ देखल जा सकेला कि जहवाँ सांसद आपन सबाल में भोजपुरी ख़ातिर भासा सबद इस्तेमाल कइले बाड़ें, ओहिजें मंतरी महोदय भोजपुरी के बोली कहत रहलें।

1971 में जब भोगेंदर झा भोजपुरी, मैथिली आ राजस्थानी ख़ातिर संबिधान संसोधन बिधेयक पेस कइलें त मूलचंद डागा भासा आ बोली के सबाल उठवलें। उहाँ के कहलें बोली अलगा-अलगा हो सकेलीं सऽ, एही ख़ातिर बोली के भासा जनी समझीं जाऽ।

नब्बे के दसक ले आवत-आवत संसद में सांसद आ मंतरी लो भोजपुरी के भासा के रूप में सकारे लागल रहलें। ई दिलचस्प बात बाटे कि भोजपुरी के बोली के बजाय भासा कहला के बात बड़ा ज़ोरदार ढंग से लाल किसुन आडवाणी जुलाई 1998 में लोक सभा में कइले रहलें। उहाँ के कहनाम रहे कि ‘हिंदी भासी राज्य होखला के बावजूद बिहार में कइगो समृद्ध भासा बाड़ीं सऽ। ओकनीं के बोली ना कहल जा सकेला। जे केहूँ भोजपुरी के बोली कहेला, तऽ हम ओकरा से सहमत नइखीं। भोजपुरी बड़ा समृद्ध भासा बाटे आ मैथिलियो समृद्ध भासा बाटे।’

भोजपुरी भासा, भोजपुरी इनवरसिटी आ भोजपुरी राज्य

भोजपुरी इलाक़ा में भोजपुरी के पढ़ाई कॉलेज आ इनवरसिटी में होखे से लेके भोजपुरी इनवरसिटी बनवला तक के माँग संसद में होखल। सितम्बर 1965 में इनवरसिटी ग्रांट्स कमीसन (यूजीसी) के लेके जवना घरी लोक सभा में बहस होत रहे, ओही घरी सांसद ए.पी. सरमा सबाल पूछलें कि का बिहार सरकार के ओर से बिहार में एगो भोजपुरी इनवरसिटी खोलला के परस्ताव आइल बा। एकरा जबाब में शिक्षा आ संसकिरती मंतरी हज़रनवीस बतवलें कि ओनका जानकारी में अइसन केवनो परस्ताव नइखे। आ खाली इनवरसिटिये ना भोजपुरी राज्य के माँगो संसद में उठल। मसलन, सितम्बर 1974 में बाढ़ के मुद्दा पे बोलत घरी बलिया के सांसद चंद्रिका परसाद कहलें कि 'हमनी के ज़िला बिहार के सीमा से लागल बा। उत्तर परदेस सरकार बलिया ज़िला के अनाज नइखे भेजत ई सोच के कि अनाज के आपूर्ति होखी तऽ अनाज बलिया से होके बिहार चल जाई। हम कहल चाहत बानीं कि केंद्र सरकार या तऽ हमनी के ज़िला ख़ातिर एगो अलगा जोन बना देव आ चाहे एगो भोजपुरी राज्य के गठन होखे, जेवन केंद्र के निगरानी में रहे।'

नब्बे के दसक में भोजपुरी राज्य के जिकिर ग़ाज़ीपुर के सांसद बिस्वनाथ सास्तरी उत्तर परदेस के अनुदान ख़ातिर लोक सभा में हो रहल चरचा के घरी आपना भासन में कइलें। उहाँ के कहलें कि आर्थिक रूप से देखल जाव त उत्तर परदेस के तीनि गो इलाक़ा – उत्तराखंड, बुंदेलखंड आ पूरबी उत्तर परदेस – बहुत पिछड़ल बाड़न सऽ। उहाँ के पूरबी उत्तर परदेस ख़ातिर बिकास बोर्ड बनवला के माँग संसद में उठवलीं आ कहलीं कि 'भोजपुरी राज्य के माँग आजु उठ रहल बा। आ जो ई इलाक़ा के बिकास ना होखी, त

पूरबी उत्तर परदेस के लो उत्तराखंड राज्य के माँग लेखा अलगा भोजपुरी राज्य भा पुर्बांचल राज्य के माँग करे लागिहें। ई हालत बा। एही ख़ातिर एही पिछड़ा इलाकन के संगे न्याय करल जरुरी बा।'

रेडियो आ टीवी पे भोजपुरी : प्रसारण के सवाल

आकासबानी के प्रसारण आ खास-खास रेडियो इस्टेसन से प्रसारित होखे बाला कार्जक्रम के भासा के लेके सांसद लो पचास के दसक से संसद में लगातार सबाल उठावत रहल हऽ। पहिलकी संसद के सुरु होखला के दु महीना के भीतरे जुलाई 1952 में आकासबानी के प्रसारण आ उत्तर परदेस में होखे बाला रेडियो प्रसारण के लेके सबाल उठल। सबाल उठावे बाला रहलें उत्तर परदेस के मछलीसहर के सांसद गणपति राम। उहाँ के पूछलें कि आकासबानी हिंदुस्तान में केतना भासा में प्रसारण करेले। उहाँ के इहो पूछलें कि बनारस डिविज़न के केवनो बोलियो के इस्तेमाल प्रसारण में होखेला आ ओही बोलियन में केतना प्रोग्राम प्रसारित भइल बा। एही सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी बी.वी. केसकर बतवलें कि आकासबानी हिंदुस्तान के तेरह गो भासा में प्रसारण करेले। एकरा अलावा आकासबानी के इस्टेसन से स्थानीय बोलियन में प्रसारण होखेला। उत्तर परदेस के लखनऊ आ इलाहाबाद इस्टेसन से हिंदी आ उर्दू के अलावा अबधी, भोजपुरी, ब्रज, बुंदेलखंडी, बघेलखंडी, मगही आ कुमाऊँनी बोलियन में प्रसारण होखेला। आ पटना इस्टेसन से भोजपुरी, मगही के प्रोग्राम प्रसारित होखेलें सऽ, एकर जानकारी उहाँ के सदन के दिहलीं। ओही जानकारी के मुताबिक़ जनवरी 1952 से लेके मार्च 1952 ले पटना (525 मिनट), इलाहाबाद (100 मिनट) आ लखनऊ (85 मिनट) इस्टेसन से भोजपुरी

प्रोग्राम प्रसारित भइल रहलें सऽ। एही सबाल आ जबाब दुनों में इहो देखल जा सकेला कि भोजपुरी, अबधी, ब्रज, मगही आदि के अबहीं बोलिये मानल जात रहे, भासा ना।

दिसम्बर 1964 में बिभूति मिसिर आ के.एन. तिबारी संसद में सबाल पूछलें कि का आकासबानी के दिल्ली, पटना आ दोसर इस्टेसन से प्रसारित होखे बाला प्रोग्राम, ख़ासकर खेती-किसानी के लेके, देस के तमाम इलाक़ा के किसानन ख़ातिर उपयोगी नइखन सऽ। एही सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी इंदिरा गांधी बतवलीं कि अइसन बात नइखे। किसानन ख़ातिर ई प्रोग्राम उपयोगी बाड़न सऽ आ किसान लो बड़ दिलचस्पी से ई सभ प्रोग्राम सुनेला। प्रोग्रामन के भासा के लेके उहाँ के इहो बतवलीं कि दिल्ली इस्टेसन से हिंदी, हरियाणवी आ ब्रज में, पटना इस्टेसन से हिंदी, भोजपुरी, मैथिली आ मगही में आ राँची से हिंदी, नागपुरी, हो, संथाली, मुंडारी, ओराँव आ खरिया भासा में प्रसारण होखेला।

एकरा तीन महीना बाद मार्च 1965 में महादेब परसाद आकासबानी से होखे बाला भोजपुरी कार्जक्रमन के प्रसारण के जानकारी मँगलन। उहाँ के जबाब दिहत सूचना आ प्रसारण मंतरी इंदिरा गांधी बतवलीं कि पटना आ लखनऊ-इलाहाबाद इस्टेसन से भोजपुरी के प्रोग्राम आ प्रसारित होखेला। ओ घरी पटना से हर महीना 340 मिनट आ लखनऊ-इलाहाबाद से 310 मिनट भोजपुरी कार्जक्रम प्रसारित होत रहे।

जुलाई 1971 में बिभूति मिसिर एक बार फेरु आकासबानी से भोजपुरी प्रोग्रामन के प्रसारण के लेके सबाल उठवलें। उहाँ के इहो पूछलें कि का मोतीहारी में आकासबानी के इस्टेसन बनवला के सरकार के केवनो योजना बा। जेकरा से चम्पारन ज़िले के नचिका के लो आ नेपाल तराई के इलाक़ा के लो भोजपुरी प्रोग्राम सुन सके। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी नंदिनी सतपथी कहलीं कि पटना

इस्टेसन से होखे बाला प्रसारण चम्पारन में सुनल जा सकेला, बाकिर मोतीहारी में इस्टेसन बनवला के लेके उहाँ के कहलीं कि सरकार के अइसन केवनो योजना नइखे। एही तरे जनवरी 1976 में सरजू पांड़े बिहार आ उत्तर परदेस में आकासबानी के प्रसारण में भोजपुरी परोग्रामन के बढ़ावला के अनुरोध सरकार से कइलें।

अप्रैल 1981 में लोक सभा में सरकार अइसन भासन के अख़बारन के संख्या बतावल जेवन अठवाँ अनुसुची में सामिल न भइल रहलीं सऽ। ओही आँकड़ा के मुताबिक़ ओही घरी भोजपुरी में छपे बाला अखबारन के संख्या 7 रहे। 1982 में लोक सभा में असफ़ाक हुसैन सबाल उठवलें कि का रेडियो आ टीवी पे भोजपुरी प्रोग्राम के प्रसारण के सरकार बढ़ावा देत बिया। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी आरिफ़ मोहम्मद खाँ बतवलें कि दूरदरसन के मुज़फ़्फ़रपुर इस्टेसन से भोजपुरी कार्जक्रम प्रसारित होखेला। उहाँ के इहो जोड़लें कि आकासबानी के पटना, इलाहाबाद, बनारस, गोरखपुर इस्टेसन से भोजपुरी प्रोग्राम प्रसारित होखेला।

एकरा तीन साल बाद अगस्त 1985 में जितेंदर सिंह सबाल उठवलें कि आकासबानी आ दूरदरसन के दिल्ली केंद्र से भोजपुरी के केतना प्रोग्राम आ फ़िलिम प्रसारित होखेलीं सऽ। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी वी.एन. गाडगिल बतवलें कि आकासबानी आ दूरदरसन के दिल्ली केंद्र से होखे बाला प्रसारण के मुख्य भासा हिंदी बा। उहाँ के इहो बतवलें कि आकासबानी दिल्ली से हर दोसरका सोमार के बीस मिनट ले भोजपुरी गीतन के प्रसारण होखेला आ दूरदरसन के दिल्ली इस्टेसन से पिछिला एक

बरिस में छह गो भोजपुरी कार्जक्रम (जेमे फ़िलिम, भोजपुरी गीत आ लोकगीत सामिल रहे) के प्रसारण भइल बा।

आकासबानी से प्रसारित होखे बाला कुछ खास कार्जक्रमन के भोजपुरी में प्रसारित कइला के माँगो संसद में उठल। साल 1987 में प्रभावती गुप्ता आकासबानी के प्रोग्राम साप्ताहिक समीच्छा के भोजपुरी आ मैथिली में प्रसारित कइला के माँग रखलीं। महराजगंज के सांसद गिरिजा देवी मार्च 1994 में बिहार के भोजपुरीभासी इलाक़ा में दूरदरसन आ आकासबानी के केंद्र ना होखला के सबाल उठवलीं आ सरकार से माँग कइलीं कि छपरा में दूरदरसन आ सीवान में आकासबानी के केंद्र बनावल जा।

अगस्त 2001 में प्रभुनाथ सिंह संसद में माँग उठवलें कि केंद्र सरकार के घोसना करे के चाहीं कि टीवी चैनलन पे भोजपुरी के प्रसारण होखी। संगे-संगे उहाँ के रेडियो आ टीवी पे होखे बाला समाचार प्रसारण में भोजपुरी के समय बढ़वला के माँग कइलीं। कुछ ख़ास परोग्रामन ख़ातिर सांसद लो संसद में माँग उठवलें। मसलन प्रभुनाथ सिंह आकासबानी के पटना इस्टेसन से प्रसारित होखे बाला भोजपुरी परोग्राम 'चौपाल' के बंद होखे के मामिला ससंद में उठवलें। उहाँ के कहलीं कि आकासबानी पटना के निदेसक के एही फ़ैसला से लोगन में ग़ुस्सा बाटे। उहाँ के माँग कइलीं कि 'चौपाल' कार्जक्रम के फेरु से चालू कइल जाव आ भोजपुरी में रोज बिला नागा 10 मिनट एगो बुलेटिन प्रसारित होखे। फ़रबरी 2003 में जब प्रभुनाथ सिंह संसद में पूछलें कि दूरदरसन के केवन छेत्रीय केंद्रन से भोजपुरी परोग्राम प्रसारित होखेलें सऽ। एकरा जबाब में सूचना मंतरी रबीसंकर परसाद बतवलें कि दूरदरसन के लखनऊ, पटना, गोरखपुर आ मुज़फ़्फ़रपुर केंद्रन से भोजपुरी परोग्राम, ड्रामा, सीरियल आ लोकगीत प्रसारित होखेला।

भोजपुरी फ़िलिम आ सरकार

साल 1964 में आकासबानी के प्रसारण आ फ़िलिम आदि के लेके होखत चरचा में हिस्सा लेत घरी सूचना आ प्रसारण मंतरी सत्यनारायण सिन्हा भोजपुरी फ़िलिमनो के चरचा कइलें। ख़ासकर के 1963 में रिलीज़ होखल फ़िलिम गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो के। एही फ़िलिम के अपार लोकप्रियता के चरचा उहाँ के कइलीं आ साथे-साथ बतवलीं के एही फ़िलिम के गाना एतना लोकप्रिय बाटे कि ओकरा के बजवला ख़ातिर आकासबानी के स्रोता लोगन के ख़त लगातार मिलेला। ई बात से दोसर सांसद लो आपन रज़ामंदी जतवलें। दिलचस्प बाटे कि उहाँ के उ फ़िलिम के गीत के दु गो बंदो लोक सभा में सुनवनीं।

गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो

सैयाँ से कर दे मिलनवा हो राम।

बिस्वनाथ झुनझुनवाला अप्रैल 1972 में लोक सभा में पूछलें कि पिछिलका साल दूरदरसन पे हिंदी आ छेत्रीय भासा में केतना फ़िलिम देखावल गइलीं सऽ। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी नंदिनी सतपथी बतवलीं कि साल 1971 में दूरदरसन पे 64 हिंदी आ 21 गो छेत्रीय भासन के फ़िलिम देखावल गइलीं सऽ। एही 21 फ़िलिमन में खाली एगो भोजपुरी के फ़िलिम रहे। ओही साल एगो सबाल सरोज मुखर्जी फ़िलिम फ़ाइनेंस कारपोरेसन आ भोजपुरी फ़िलिमन के लेके पूछलें। उहाँ के सबाल रहे कि का फ़िलिम फ़ाइनेंस कारपोरेसन भोजपुरी, ओड़िया, असमिया, नेपाली, मनिपुरी आ त्रिपुरी भासा के फ़िलिमन के बढ़ावा दिहले बा। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण उप-मंतरी धरम बीर सिनहा बतवलें

कि फ़िलिम फ़ाइनेंस कारपोरेसन के उद्देस बढ़िया गुणवत्ता बाली फ़िलिमन के बनवला ख़ातिर फ़ाइनेंस करल बाटे। उहाँ के बतवलीं भोजपुरी, ओड़िया, असमिया, नेपाली भासा के फ़िलिमन के फ़ाइनेंस ख़ातिर अर्ज़ी कम मिलेले। एही से फ़िलिम फ़ाइनेंस कारपोरेसन एही भासन के फ़िलिमन के बढ़ावा देवे ख़ातिर ओतना काम नइखे कइले जेतना कि कछु दोसर भासन के फ़िलिमन ख़ातिर कर रहल बाटे।

अप्रैल 1976 में लोक सभा में सूचना आ प्रसारण मंतरालय ख़ातिर अनुदान पे होखत चरचा में भाग लिहत घरी रामावतार सास्तरी भोजपुरी, मैथिली आ मगही के फ़िलिमन के निर्माण ख़ातिर जरुरी मदद दिहला के मुद्दा उठवलें। मार्च 1978 में सांसद दुर्गा चंद छेत्रीय भासा के सिनेमा के लेके सबाल संसद में पूछलें। उहाँ के सबाल के जबाब देत सूचना आ प्रसारण मंतरी लाल किसुन आडवाणी छेत्रीय भासा के सिनेमा के जेवन भासावार आँकड़ा दिहलें। ओकरा मुताबिक़ साल 1977 में दुगो भोजपुरी फ़िलिम बनल रहलीं सऽ। ओकनीं के नाम रहे : 'डाकू रानी गंगा' आ 'दंगल'। एकरा चार साल बाद भारत में बने बाली फ़िलिमन के लेके पूछल गइल एगो सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी बसंत साठे जेवन आँकड़ा दिहलें ओकरा मुताबिक़ भोजपुरी में साल 1978, 1979 आ 1980 में क्रम से 1, 2 आ 3 फ़िलिमन के सेंसर बोर्ड साटिफ़िकिट दिहले रहे। एही क्रम में आगे के साल में देखल जाव त 1981 में पाँच, 1982 में 3, 1983 में 11, 1984 में 9, 1985 में 6, 1986 में 19, 1987 में 14, 1988 में 8, 1989 में 10, 1990 में 5, 1994 में 4, 1995 में 6, 1997 में 2, 1998 में 6, 1999 में 2, 2000 में 2, 2001 में 3, 2002 में 7, 2003 में 10, 2004 में 21, 2005 में 39, 2006 में 76, 2009 में 64, 2010 में 67, 2011 में 74 गो भोजपुरी फ़िलिमन के सेंसर बोर्ड पास कइले रहे। नवम्बर 1986 में घोसी के

सांसद राजकुमार राय संसद में पूछलें कि साल 1985-86 में केतना भोजपुरी फ़िलिम दूरदरसन पे देखावल गइलीं सऽ। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी ए.के. पांजा बतवलें कि एही दरमियान दु गो भोजपुरी दूरदरसन से प्रसारित होखल बाटे। एकरा आगहुँ राजकुमार राय संसद में भोजपुरी के लेके सबाल उठवलें।

मारीशस लेखा देसन में जहाँ भोजपुरिया लो के तादाद काफ़ी रहे, ओहिजा भोजपुरी फ़िलिम आ टीवी प्रोग्रामन के माँग होत रहे। साल 1983 में लोक सभा में राजनाथ सोनकर, सूरज भान आ अटल बिहारी बाजपेयी सबाल उठवलें कि का सूचना आ प्रसारण मंतरी अखबारन में छपल ई ख़बर से परिचित बाड़ें कि मारीशस के निदेसक हरीश बी. कुछ दिन पहिले दिल्ली आइल रहलें आ जब उ दूरदरसन से मारीशस के जनता ख़ातिर हिंदी आ भोजपुरी में बनल नीमन फ़िलिम आ टीवी प्रोग्रामन के माँग कइले त उहाँ के अंगरेज़ी के प्रोग्राम देवे के बात कहल गइल। एही सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण उप मंतरी मल्लिकार्जुन बतवलें कि 6 जनवरी 1983 के सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी के संगे मिलत घरी मारिशस के उप-प्रधानमंतरी हरीश बुधु दूरदरसन के बनावल भोजपुरी, हिंदी, तेलुगु, तमिल, मराठी के प्रोग्राम माँग कइलें। दूरदरसन ओही घरी भोजपुरी में प्रोग्राम ना बनावत रहे, एही ख़ातिर उहाँ के दोसर भासन (हिंदी, तमिल, तेलुगु, मराठी, बांग्ला आ अंगरेज़ी) के प्रोग्राम दिहल गइल।

मार्च 1991 में रामकिसुन यादव संसद में भोजपुरी फ़िलिमन के दूरदरसन पे प्रसारण के लेके सबाल उठवलें। ओही घरी चंद्रशेखर प्रधानमंतरी रहलें, उहाँ के खुदे बलिया के रहे बाला रहलीं, आ सूचना आ प्रसारण मंतरियो भोजपुरिये इलाक़ा के रहलें, इहो बात के जिकिर रामकिसुन यादव आपन भासन

में कइले रहलें। अगस्त 1996 में रामकिरपाल यादव पिछिला तीन बरिस में दूरदरसन पे देखावल भोजपुरी फ़िलिमन के आँकड़ा माँगलें। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी सीएम इब्राहिम बतवलें कि 1993-94 में 3, 1994-95 में 3 आ 1995-96 में 20 गो भोजपुरी फ़िलिम दूरदरसन पे देखावल गइलीं सऽ।

आगे चलके रामकिरपाल यादव भोजपुरी चैनलो सुरु कइला के माँग उठवलें। साल 2008 में प्रभुनाथ सिंह संसद में पूछलें कि सरकार अबहीं ले केतना निजी भोजपुरी चैनलन के अनुमति दिहले बिया आ केतना चैनलन के परस्ताव पे बिचार करत बिया? एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी प्रियरंजन दासमुंसी बतवलें कि सरकार अबहीं ले दु गो भोजपुरी भासा के चैनलन – महुआ आ फ़ोकस टीवी - के अनुमति देखले बिया। पाँच गो आउरी चैनलन – हम भोजपुरिया, गंगा, पहली खबर, महुआ गीत आ हमार टीवी - के परस्ताव पे बिचार कर रहल बिया।

2018 में लोक सभा में पूछल एगो सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी राज्यबरधन सिंह राठौड़ बतवलें कि भोजपुरी के फ़िलिम समारोह आयोजित कइला ख़ातिर सरकार अनुदान देत बिया। फ़रबरी 2017 में नई दिल्ली में होखल भोजपुरी फ़िलिम समारोह के आयोजन फ़िलिम समारोह निदेसालय करावल, जेकरा ख़ातिर 8 लाख 61 हज़ार के अनुदान दिहल गइल रहल।

एही अध्याय में हमनीं के लोक सभा में भोजपुरी के लेके होखल चरचा के पड़ताल कइलीं जा। ई चरचा में संबिधान के अठवाँ अनुसुची, साहित अकादमी से लेके जनगणना, भासा आ बोली के सबाल, टीवी आ रेडियो पे भोजपुरी कार्जक्रम के प्रसारण आ भोजपुरी फ़िलिमन के निर्माण लेखा तमाम बिसय

सामिल रहलें सऽ। अगिला अध्याय में हमनी के राज्य सभा में भोजपुरी के लेके होखल चरचा के पड़ताल करब जा।

सांसद गैलरी (लोक सभा)

भोगेंदर झा (मधुबनी)

बिभूति मिसिर (मोतिहारी)

डॉ. महादेब परसाद (महाराजगंज)

डॉ. राम सुभग सिंह (बक्सर)

सरजू पांड़े (ग़ाज़ीपुर)

मृत्युंजय परसाद (सीवान)

चंद्रिका परसाद (बलिया)

सत्यगोपाल मिसिर (तामलुक)

अशफाक़ हुसैन (महाराजगंज)

गिरिजा देबी (महाराजगंज)

बिस्वनाथ सास्तरी (ग़ाज़ीपुर)

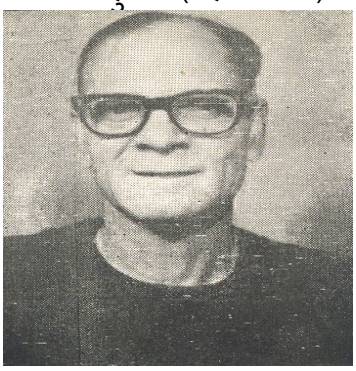

रामावतार सास्तरी (पटना)

राजकुमार राय (घोसी)

प्रभावती गुप्ता (मोतिहारी)

प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज)

रघुबंस परसाद सिंह (बैसाली)

सैलेंदर कुमार (कौसांबी/चायल)

हुकुमदेब नारायण यादव (मधुबनी)

रघुनाथ झा (बेतिया)

योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर)

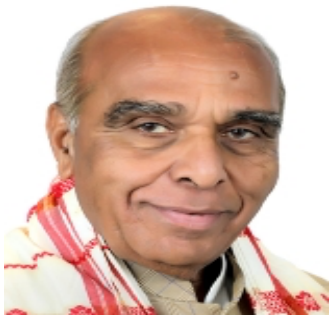

जगदंबिका पाल (डुमरियागंज)

शत्रुघन सिनहा (आसनसोल)

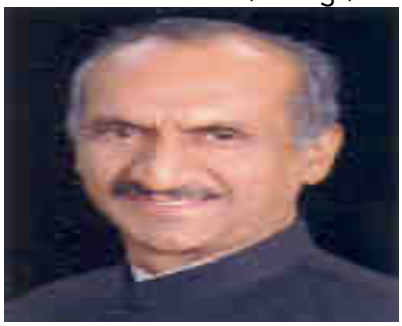

जयपरकास अगरवाल (दक्खिन दिल्ली)

महाबल मिसिर (पच्छिम दिल्ली)

 संजय निरुपम (बम्बई उत्तर)	 बैदनाथ परसाद महतो (बाल्मीकिनगर)	 सैयद साहनवाज़ हुसैन (भागलपुर)
 ओमपरकास यादव (सीवान)	 उमासंकर सिंह (महाराजगंज)	 रामकिरपाल यादव (पाटलिपुत्र)
 अश्विनी चौबे (बक्सर)	 जनार्दन सिंह (महाराजगंज)	 राजीब प्रताप रुडी (सारन)
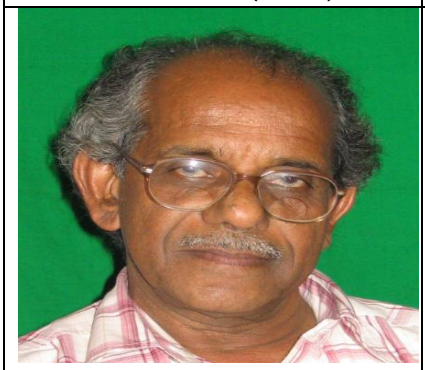 सी.के. चंद्रप्पन (त्रिचुर)	 रामकिसुन यादव (चंदौली)	 मीना सिंह (आरा)

(साभार : डिजिटल संसद)

राज्य सभा में भोजपुरी

भोजपुरी भासा के मुद्दा संसद के दुनो सदन में रहि-रहि के उठत रहल बाटे। भासा से जुड़ल एही बहसन के तमाम पच्छ रहे। पिछिलका अध्याय में हमनीं के लोक सभा में भोजपुरी के लेके होखल बहस के पड़ताल कइलीं जा। एही अध्याय में हमनी के ई पड़ताल कइल जाइ कि राज्य सभा में भोजपुरी भासा के मुद्दा कइसे उठल, के लोग ई मुद्दा उठावल, ओकरा के लेके सरकार के का रवैया रहल, सुरुआती दउर से लेके आजु के घरी ले राज्य सभा के संदर्भ में ई कुल्ही मुद्दन के समझल जाव, ई हमनी के कोसिस होखी। जेसे हमनी के आजु के ज़माना में भोजपुरी के सबाल आ ओसे अझुराइल राजनीत के गहिरे उतर के समझ सकीं जा। भासा से जुड़ल केवन सबालन के राज्य सभा में सांसद लो उठवले बा, बखत के साथ ओमें का अंतर आइल बाटे, इहो समझला के कोसिस हमनीं के करब जा।

राज्य सभा के सुरुआती दउर आ भोजपुरी

राज्य सभा में भोजपुरी के पहिला-पहिल जिकिर साल 1953 में भइल एगो बहस में होखल।[9] ई बहस ओही घरी भारत के भासा आ साहित के हालात क जायज़ा लेवे ख़ातिर एगो कमीसन बनावला के मसविदा पे भइल रहे। एही मसविदा के मदरास के सांसद रामा राव राज्य सभा में राखले रहीं। मसविदा के मुताबिक़ एही कमीसन के उद्देस रहे : लेखकन के आर्थिक आ दोसर तरीक़ा से मदद कइल; कॉपीराइट

[9] राज्य सभा के बहसन ख़ातिर देखीं : https://rsdebate.nic.in

क़ानून में एही ढंग से बदलाव कइल कि उ लेखक के अधिकार के रच्छा करे; नाटककारन के अधिकार के रच्छा ख़ातिर अलगा से क़ानून बनावल; पुरान आ नया ज़माना के किताबिन के अनुबाद; कला, आलोचना, दर्सन, राजनीत, लोकगीत लेखा विसयन पे नया साहित के बिकास; हिंदुस्तान के तमाम भासा के लेखकन के बीचे समपरक बढ़ावल; स्कूल, कॉलेज आ इनवरसिटी के किताब छापल; एही कुल उद्देस के पूरा करे ख़ातिर चंदा जुटावल आ सरकार आ समाज में सहयोग।

फ़रबरी 1953 में जवना घरी ई मसविदा राज्य सभा में पेस भइल आ ओकरा पे बहस होखल त ओमें बंगाल से बी. गुप्ता, एस.एन. मजूमदार, उत्तर परदेस से चंद्रावती लखनपाल, मध्य परदेस से डॉ. सीता परमानंद, डबल्यू.एस. बारलिंगे, डॉ. रघुबीर, विंध्य परदेस से बनारसी दास चतुर्वेदी, के.बी. लाल, कैलाश नाथ काटजू, बम्बई से लीलावती मुंशी, काकासाहब कालेलकर आ रामधारी सिंह दिनकर, एन.आर. मलकानी, सी.जी.के. रेड्डी, मौलाना एम. फ़ारूक़ी लेखा लो हिस्सा लिहलें।

काकासाहब कालेलकर प्रांतन के भासा के लिहाज़ से बड़ा महत्त्व के बात कहलीं। उहाँ के कहनाम रहे कि ‘हमनी के बिधान के सेड्यूल आठ में चौदह भा पंद्रह भासा के ज़िकिर बा। एतने भासा के मान्यता मिलल बा। नेता लोग ई समझे लागल बाड़ें कि मानो एतने भासन के जियला के अधिकार बाटे। ई बात ठीक नइखे। केवनो भासा, चाहे उ केतनो छोट होखे, ओकर साहित ना के बराबर होखे, तबो उ भासा ओकरा के बोले बाला लोगन ख़ातिर माई होखेले। ओही लोगन के बाल-बच्चन के पराइमरी के पढ़ाई ओही भासा में होखे के चाहीं। चौदह भासा के छोड़ी के आउर जेतना भासा बाड़ीं सऽ, ओकनीं ख़ातिर बिधान के लिहाज़ से भले धियान ना दिहल जाव बाकिर संस्किरती के लिहाज़ से ओकनीं के उपेच्छा

ना कइल जा सकेला।' उहाँ के देसी भासन में संदर्भ किताबिन के तइयार कइला आ देस में भासा के सरवे पे ज़ोर दिहलीं।

एही बहस में हिस्सा लेत घरी हैदराबाद के सदस्य डॉ. आर.बी. गौर हिंदी के बोलियन क बात उठावलीं। गौर साहब उत्तरे परदेस के रहे बाला रहनीं, बाकिर उहाँ के हैदराबाद चल गइल रहलीं आ उहवें से राज्य सभा के मेम्बर बनके आइल रहलीं। उहाँ के हिंदुस्तानी के हामी रहनीं आ आपन भासन में डॉ. रघुबीर के हिंदी से उहाँ के आपन मतभेद जतवलीं। उहाँ के कहलीं कि 'डॉ. रघुबीर आ ओनकर संघतिया लो जेवन हिंदी बना रहल बाड़ें उ हिंदी इलाक़ा के भोजपुरी, ब्रज, अबधी, मगधी लेखा बोलियन से दूर जा रहल बाटे। ई रुख़ बहुत ख़तरनाक बाटे।' उहाँ के एगो जरुरी मुद्दा जरुर उठवलीं, बाकिर उहाँ के भोजपुरी, ब्रज, अबधी, मगधी लेखा तमाम भासन के बोली बतवलीं, भासा ना।

अठवाँ अनुसुची आ भोजपुरी

भारत के संबिधान में दिहल अठवाँ अनुसुची में भोजपुरी आ दोसर भासा सामिल करे ख़ातिर राज्य सभा में बेर-बेर भोजपुरी के मुद्दा उठत रहल बा। दिसम्बर 1963 में जब राज्य सभा में भासाई अल्पसंख्यकन के कमिश्नर के रिपोर्ट पे बहस होत रहे त अठवाँ अनुसूचियो के मुद्दा उठल। राज्य सभा के नामित मेम्बर एम. सत्यनारायण आपन तक़रीर में कहलें कि अंगरेज़ी, सिंधी आ दोसर भासन के अठवाँ अनुसुची में रखला के माँग उठ रहल बा। एही मुद्दा पे उहाँ के कहलीं कि 'एही देस में असंख्य भासा बाड़ीं सऽ। कुछ भासा खाली बोलल जालीं सऽ, तऽ कुछ बोलल आ लिखल दुनो जानीं। दक्खिन में तुलू आ कोंकणी से लेके उत्तर में मैथिली, बघेली, भोजपुरी आ दोसर तमाम भासा बाड़ीं सऽ। बाकिर

उ सभनी के अठवाँ अनुसुची में सामिल ना कइल जा सके।' उहाँ के भासा के सबाल पे सोचत घरी भावना में बहला से बचे के आ छोट सोच भा तंगनज़री से ऊपर उठला पे ज़ोर दिहलीं। भासाई अल्पसंख्यक के सबाल प उहाँ के कहलीं कि अठवाँ अनुसुची से ढेर महत्त्व के सबाल ई बाटे कि का भासाई अल्पसंख्यकन से जुड़ल नियम-क़ानून ओ भासा के बिकास में मददगार बाटे। आ दोसर बात ई कि का पराइमरी स्कूल ख़ातिर ओही भासा के इस्तेमाल होत बा आ का भासाई अल्पसंख्यकन से ठीक बेवहार होत बा?

जुलाई 1980 में जब राज्य सभा में राजभासा समिति ख़ातिर मेम्बर बनवला के परस्ताव गृह मंतरी गियानी ज़ैल सिंह लियईलें, त भूपेस गुप्ता मनिपुरी आ नेपाली भासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के बात कहलें। ओही घरी उत्तर परदेस के सांसद नागेस्वर परसाद साही कहलें कि भोजपुरियो के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइल जाव। अस्सी के दहाई में मैथिली भासा के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर माँग ज़ोर पकड़त रहे। मसलन फ़रबरी 1981 में शिबचंद्र झा एगो संबिधान संसोधन के मसविदा दिहलें, जेकर उद्देस रहे कि मैथिली के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइल जाव। ओही घरी जेवन बहस भइल रहे ओकरा देखला से ई बात साफ़ हो जाले कि राज्य सभा में जेतना ज़ोरदार ढंग से मैथिली के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग मिथिलांचल के सांसद लो उठवलें ओही ढंग से भोजपुरिया इलाक़ा के सांसद लो भोजपुरी के पच्छ में माँग न उठवलें। ई एही इलाक़ा के नेता लो के एगो बड़ कमी कहल जाई। नब्बे के दसक में राज्य सभा में ईश दत्त यादव भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला से जुड़ल सबाल पूछलें। जेकरा जबाब में गृह राज्य मंतरी पी.एम. सईद कहलें

कि सरकार भोजपुरी, मैथिली आ दोसर भासन के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला पे बिचार कर रहल बाटे।

दिसम्बर 2003 में जब गृह मंतरी लाल किसुन आडवानी राज्य सभा में संबिधान संसोधन के बिल पेस कइलें, जेकर उद्देस रहे अठवाँ अनुसुची में बोडो, मैथिली, डोगरी आ संथाली भासा के सामिल कइल। एही बिल पे राज्य सभा में 23 दिसम्बर के बहस आ ओट होखल, जेमा प्रणब मुखर्जी, के. नटवर सिंह, अर्जुन सिंह, एल.एम. सिंघवी, लालू परसाद यादव, करण सिंह, एस.एस. अहलुवालिया, चंद्रकला पांडे, नीलोत्पल बसु, मतिलाल सरकार, एस. विदुथलै विरुंबी, जनेस्वर मिसिर, मोतीलाल बोरा लेखा सांसद लो हिस्सा लिहल। एही बहस में भोजपुरियो के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग लालू परसाद आ दोसर सांसद लो उठवलें। जहवाँ सांसद लो आपन-आपन भासा के अठवाँ अनुसुची में रखला पर ज़ोर दिहत रहलें, ओहिजें सांसदन के एगो तबका रहे जेवन बोली आ भासा के भेद आ देस क एकता के सबाल उठावत रहे। भासा के अधिकार ख़ातिर उठत माँग के उ लोग देस के एकता आ अखंडता ख़ातिर ख़तरा बूझत रहे।

एही बहस में लालू परसाद भोजपुरी के पच्छ लिहलें आ कहलें कि ‘भोजपुरी एगो राज्य में ना बलुक बिहार, उत्तर परदेस इहाँ ले कि मारीशस आ सूरीनामो में बोलल जाले। भोजपुरी हिंदी के माई बिया। स्वर्गीय भिखारी ठाकुर भोजपुरी के शेक्सपियर कहल जालें। बाकिर जेवन संसोधन आइल बाटे ओमें भोजपुरी के छोड़ दिहल गइल बाटे।’ झारखंड के सांसद एस.एस. अहलुवालिया भोजपुरी के समर्थन

कइलीं। उहाँ के बतवलीं कि एकरा पहिलहुँ उहाँ के 27 नवम्बर 1992 के निजी हैसियत में भोजपुरी आ मैथिली के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर एगो बिल सदन में रखले रहलीं।

मई 2007 में बिहार से राज्यसभा सांसद अली अनवर भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर संबिधान संसोधन के माँग उठवलें। उहाँ के कहलें कि 'आजु दुनिया के कई देसन में फइलल भोजपुरी बोले बाला लोगन के तादाद 12 करोड़ बाटे।' बिहार, उत्तर परदेस आ झारखंड से लेके भोजपुरी बोले बाला लोग फ़िजी, त्रिनिदाद आ टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, मारीशस, दक्खिन अफ़रीका लेखा देसन में फैलल बाड़ें। उहाँ के इहो कहलीं कि अठवाँ अनुसुची में अइसनो भासा बाड़ीं सऽ जेवना के छेत्र आ बोले बाला लोगन के तादाद भोजपुरी से कम बाटे, बाकिर तबो ओही भासन के अठवाँ अनुसुची में रखल गइल बा। एही ख़ातिर भोजपुरी के ओकर हक़ मिले के चाहीं आ ओकरा के अठवाँ अनुसुची में जगह मिले के चाहीं। साल भर बाद मार्च 2008 आ फेरु जुलाई 2009 में अली अनवर भोजपुरी के पच्छ में माँग उठवलें। अप्रैल 2010 में जब प्रभात झा आ बलवंत आप्टे ई सबाल पूछलें कि एही समय केतना भासन के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला ख़ातिर माँग उठ रहल बा। त एकरा जबाब में गृह राज्य मंतरी अजय माकन बतवलें कि कुल्ही 38 भासन के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग बाटे। एही 38 भासा में भोजपुरियो सामिल बाटे।

एकरा बादो राज्य सभा में सांसद लो भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग उठवलें। एही सांसदन में रामकिरपाल यादव, राकेस सिनहा, नीरज सेखर, राधामोहन दास अगरवाल सामिल रहलें। एही तरे जब अप्रैल 2017 में बी.के. हरिपरसाद कोडावा आ तुलू भासा के अठवाँ अनुसुची में

सामिल कइला ख़ातिर निजी सदस्य के रूप में संबिधान संसोधन के प्रस्ताव दिहलें त ओही प्रस्ताव पे होखल बहस में उत्तर परदेस से राज्य सभा के सांसद सिव प्रताप सुकुल भोजपुरी के पच्छ में आवाज़ उठवलें।

अठवाँ अनुसुची के लेके एगो मूलभूत सबाल अप्रैल 2016 में बिजय गोयल उठवलें। उहाँ के अठवाँ अनुसुची में केवनो भासा के सामिल कइला के कसौटी के लेके सबाल उठवलीं। एकरा संगे उहाँ के इहो पूछलीं कि सरकार बोली आ भासा में केवना आधार पे अंतर करेले आ केवनो भासा अठवाँ अनुसुची में सामिल होखेले त ओकरा के का फ़ायदा होखेला। उहाँ के एही सबाल के जबाब गृह राज्य मंतरी किरेन रिजिजु दिहलें। भासा के लेके किरेन रिजिजु कहलें कि 'भासा एगो समाजिक-आर्थिक-भौगोलिक रचना बा, सगरी भासा के सुरुआत बोली/मातृभासा के रूप में होखेला आ कुछ समाजिक-आर्थिक-राजनीतिक बजह से उ भासा बनेले।' बोली आ भासा के फ़रक के लेके उहाँ के कहलें कि बोली आ भासा में फ़रक कइला के केवनो भासावैज्ञानिक आधार नइखे। समाजिक रूप से एगो बोली धीरे-धीरे बिकसित होखे भासा बन सकेले। बाकिर बोली के भासा बनला के ई प्रकिरिया में समाजिक-आर्थिक-राजनीतिक ताक़त के आपन भूमिका होखेला। अठवाँ अनुसुची में भासा के सामिल कइला के कसौटी के लेके किरेन रिजिजु 1996 के पाहवा कमिटी आ 2003 के सीताकांत महापात्र कमेटी के हबाला दिहलें। बाकिर सच्चाई त इहे ह कि उ दुनो कमेटी के सुझाव खाली रपट के पन्ना में बंद होके रह गइल। आ साल-दू साल ना तब से बीसन साल बीत गइल बा।

एही बहस में हिस्सा लेवे बाला सांसदन में सत्यबरत चतुर्वेदी, आनंद भास्कर रापोलू आ पबन कुमार वर्मो रहलें। पबन कुमार भासा आ बोली के फ़रक के लेके सबाल उठवलें। उहाँ के पूछलें कि ई फ़रक केवना आधार पे कइल जात बा - लिपि के आधार पे, बोले बाला लोगन के तादाद के आधार पे आ कि ओही भासा के साहित के आधार पे। उहाँ के भोजपुरी के उदाहरन दिहलीं कि भोजपुरी त करोड़न लोगन के भासा बिया, तवनो पे ओकरा के अठवाँ अनुसुची में जगह ना मिलल बा। अठवाँ अनुसुची में सामिल होखला से होखे बाला फ़ायदा के सबाल पे रिजिजु बतवलें कि 1968 के राजभासा परस्ताव के मुताबिक़ 'अंगरेज़ी आ अठवाँ अनुसुची में सामिल भासा आ के संघ लोक सेबा आयोग के बिचार लिहला के बाद अखिल भारतीय आ केंद्रीय सेबा इंतिहान ख़ातिर बैकल्पिक माध्यम लेखा दिहल जा सकेला।' एकरा अलावा साहित अकादमी ओही भासन के उन्नति ख़ातिर कार्जक्रम आ पुरस्कार रख सकेले।

बी.के. हरिपरसाद के लियावल ओही संसोधन बिल पे जुलाई 2017 में फेरु चरचा होखल। ओही चरचा में बी.के. हरिपरसाद, प्रसन्न आचार्य, आनंद भास्कर रापोलू, एल.ए. गनेसन, प्रदीप टम्टा, रामबिचार नेताम, बिकास महातमे, सत्यनारायन जटिया, मोहम्मद अली खान आ गृह राज्य मंतरी किरेन रिजिजु लेखा लो भाग लिहल आ ओही चरचा में सिव प्रताप सुकुल लेखा लो भोजपुरी के पच्छ में माँग उठावल। सिव प्रताप सुकुल कहलें कि दोसर तमाम भासा जेवना के बोले बाला लोगन के तादाद भोजपुरी से कम रहे, ओही भासन के त अनुसुची में जगह मिल गइल, बाकिर भोजपुरी के जगह ना

मिलल। ई एगारह करोड़ भोजपुरी भासियन के उपेच्छा बाटे। केरल के सांसद सी.पी. नारायनो भोजपुरी के समर्थन दिहलें।

एकरा दु साल बाद जुलाई 2019 में बिहार के सांसद राकेस सिनहा राज्य सभा में भोजपुरी के उपेच्छा के मुद्दा उठवलें। उहाँ के कहलें कि 'भोजपुरी हज़ार साल पुरान भासा बाटे जेकरा के दुनिया के दु दर्जन देस में आ एही देस के लगभग सगरी राज्यन के बीस करोड़ लो बोले बाला बाड़ें।' भासाविग्यानी गनेस देवी कऽ हबाला देत उहाँ के कहलीं कि गनेस देवी के रिसर्च बतावेले कि भोजपुरी दुनिया के सभका ले तेज बढ़े बाला भासा बिया। एकरा बाद उहाँ के इहो जोड़लीं कि 'मारीशस के सरकार 2011 में भोजपुरी के संबैधानिक मान्यता दिहले बिया आ भोजपुरी के 'गीत गवनई' के यूनेस्को से सांस्कृतिक बिरासत के दर्जा मिलल बाटे। संसद में भोजपुरी के संबैधानिक मान्यता कऽ मांग कऽ इतिहास बतावत उहाँ के इयाद दियवलीं कि चउथकी लोकसभा में साल 1969 में सांसद भोगेंदर झा निजी मेम्बर के हैसियत से भोजपुरी के पच्छ में बिधेयक लियवलीं। आ तब से 18 गो निजी बिधेयक भोजपुरी के संबैधानिक मान्यता दियावे ख़ातिर संसद में आइल बाड़ें सऽ बाकिर भोजपुरी के अबहियो संबैधानिक मान्यता नइखे मिलल।

सितम्बर 2020 में उत्तर परदेस से राज्य सभा सांसद नीरज सेखर इहे कुल बातन के संगे भोजपुरी के मुद्दा उठवलें। उहाँ के कहलें कि मारीशस आ नेपाल में त भोजपुरी के संबैधानिक मान्यता मिल गइल बा बाकिर आपना देस में ना जहवाँ बीस करोड़ लो भोजपुरी बोलेला। उहाँ के पिछिलका यूपीए सरकार में गृह मंतरी पी. चिदम्बरम के भोजपुरी में कहल बातो याद दियइलीं, जे कहले रहलीं कि 'हम रउआ

सभके भावना समझत बानीं।' नीरज सेखर आपन बात राखत घरी प्रधानमंतरी आ गृह मंतरी से अनुरोध कइलें कि भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइल जाव। नीरज सेखर के उठावल ए मुद्दा के तमाम राज्यन के सांसद समर्थन दिहलें। एही सांसदन में के.जे. अल्फ़ोन्स (राजस्थान), अमर पटनायक (ओड़िसा), मनोज कुमार झा (बिहार), एम. सनमुगम (तमिलनाडु), रामबिचार नेताम (छत्तीसगढ़), नरहरी अमीन आ रमिलाबेन बारा (गुजरात), बिकास महातमे (महाराष्ट्र), सुरेंदर सिंह नागर आ संजय सेठ (उत्तर परदेस) आ राकेस सिनहा सामिल रहलें।

साहित अकादमी आ भोजपुरी

भोजपुरी ख़ातिर साहित अकादमी के मान्यता के सबालो राज्य सभा में बखत-बखत पे उठत रहल बाटे। मई 1974 में सरस्वती प्रधान सिच्छा मंतरी से सबाल पूछलीं कि का साहित अकादमी आगे आवे बाला बखत में केवनो भासा के मान्यता दिहला पे बिचार कर रहल बाटे आ अकादमी भारतीय भासन के मान्यता दिहे ख़ातिर का कसौटी अपनावेले? उहाँ के एही सबाल के जबाब में उप-सिच्छा मंतरी डी.पी. यादव बतवलें कि साहित अकादमी भोजपुरी, नेपाली, कोंकणी आ ख़ासी भासा के स्वतंत्र भासा के मान्यता दिहला प बिचार कर रहल बाटे। मान्यता दिहे के कसौटियो उहाँ के बतवलीं, जेकर चरचा हमनीं के पिछिलका अध्याय में कर चुकल बानीं जा। एही सबाल के जबाब मिलला के बाद राज्य सभा में भासा, लिपि आ मान्यता के सबाल के लेके एगो बहस होखल जेमा किसन बहादुर छेतरी, रजत कुमार चक्रबर्ती, नबीन चंदर बड़गोहाईं, प्रकासबीर सास्तरी, रबी राय, नीरेन घोष, भूपेश गुप्ता, ओम प्रकास त्यागी लेखा लो हिस्सा लिहल।

एकरा लगभग दुई साल बाद मार्च 1976 के महीना में नबीन चंदर बड़गोहाईं राज्य सभा में सबाल उठवलें कि का नेपाली भासा के साहित अकादमी से मान्यता मिल गइल बा। उहाँ के सबाल के जबाब में उप-सिच्छा मंतरी डी.पी. यादव बतवलीं कि फ़रबरी 1975 में साहित अकादमी के परिसद के एगो मीटिंग होखल जेमा नेपाली के मान्यता मिलल। नबीन चंदर इहो पूछलें कि अठवाँ अनुसुची में सामिल भासन के छोड़िके आउर केवन भासा बाड़ीं स जेवना के अकादमी से मान्यता मिलल बा। एकरा जबाब में मंतरी जी बतवलें कि अठवाँ अनुसुची में सामिल भासन के अलावा मैथिली, डोगरी, राजस्थानी, नेपाली, कोंकणी, भोजपुरी आ मणिपुरी के अकादमी से मान्यता मिलल बा।

जनगणना आ भोजपुरी

अठवाँ अनुसुची आ साहित अकादमी के अलाबा जनगणना में भोजपुरी के लेके राज्य सभा में चरचा होखल। साल 1973 में राज्य सभा में 1971 के जनगणना में भासा के कॉलम के लेके कइगो सबाल उठल। ओम प्रकास त्यागी मार्च 1973 में सदन में गृह मंतरी से ई सबाल पूछलें कि 'का ई साँच बात ह कि इकहत्तर के जनगणना में हिंदी भासा बोले बाला लोगन के तादाद में भोजपुरी, मैथिली, मारवाड़ी, राजस्थानी, मेवाड़ी, मालवी, बुंदेलखंडी, अवधी, ब्रज लेखा बोलियन के बोले बाला लोगन के सामिल नइखे कइल गइल। जे अइसन बा त ओकर का बजह बाटे?' उहाँ के जबाब देत उप गृह मंतरी एफ़.एच. मोहसिन सदन के बतवलें कि बुंदेलखंडी, अवधी, ब्रज, हरियानवी आ बिलासपुरी बोले बाला लोगन के हिंदीभासी मानल गइल बा, बाकिर भोजपुरी, मैथिली, मारवाड़ी, राजस्थानी, मेवाड़ी, मालवी, भागलपुरी, बिहारी आ हिंदुस्तानी बोले बाला लोगन के हिंदीभासी में सुमार नइखे कइल गइल। ई बाद

बाला भासन के बोले बाला लो के कुल्ही तादाद उहाँ के 28,860,819 बतवलीं। दोसर सबाल के जबाब में उहाँ के बतवलीं कि भासा के बर्गीकरन के ई प्राबधान 1961 के जनगणना के बर्गीकरन आ महापंजीकार ऑफ़िस के भासा बिभाग के अध्ययन पे आधारित बा।

इकहत्तर के जनगणना के लेके एगो आउरी सबाल योगेन्द्र सर्मा पूछलीं। उहाँ के सबाल रहे कि का ई ठीक बात बा कि 1971 के जनगणना में दु करोड़ लोगन के 'बिहारी' बोले बाला दर्ज़ कइल गइल बा। आ दोसर सबाल ई कि ई 'बिहारी' भासा ह कि बोली? एही दुनो सबाल के जबाब में उप गृह मंतरी एफ़.एच. मोहसिन सदन के बतवलें कि 'बिहार सूबा में बोलल जाए वाली भासन ख़ातिर लिंगविस्टिक सर्वे में 'बिहारी' भासा के नाम अपनावल गइल बा। जेमा बिहार के सगरी भासा – जेमा तीन गो प्रमुख भासा बाड़ीं सऽ मैथिली, भोजपुरी, मगधी - के 'बिहारी' कहल गइल बा काहें कि ई सगरी भासन के बिकास मागधी, प्राकृत से भइल बा। एही 'बिहारी' भासा में सामिल सभ भासा के बोले बाला लो के कुल्ही तादाद उहाँ के 2 करोड़ 97 लाख बतवलीं।

जनगणना में भासा के सबाल बड़ा पेचीदा हवे आ ई बेवजह नइखे कि ई सबाल बेर-बेर उठत रहल बा। फ़रबरी 1979 में राजभासा नीति एगो पे प्रस्ताव पेस करत बोलत घरी तमिलनाडु के सांसद मुरासोली मारन सरकार के बतावल हिंदीभासी लो के तादाद पे सबाल उठवलें। उहाँ के कहनाम रहे कि भोजपुरी, राजस्थानी आ दोसर भासा बोले बाला लो के हिंदीभासी में सामिल कइके हिंदीभासियन के तादाद सरकार बढ़ा के बतावत बिया। जबकि हक़ीक़त ई बाटे कि जदी भोजपुरी, राजस्थानी आ दोसर भासा बोले बाला लो के तादाद सरकार के बतावल आँकड़ा से घटा दिहल जाव तऽ हिंदीभासी लो के तादाद

ओकरा से कहीं कम हो जाई।' मुरासोली मारन के प्रस्ताव में जहवाँ एन.जी. रंगा, लीला दामोदरन आ हरकिसन सिंह सुरजीत लेखा लो फेरबदल सुझवले। ओहिंजे जगन्नाथराव जोशी मुरासोली मारन के प्रस्ताव से एतराज जतवलें आ बड़ा ज़ोरदार बहस कइलें।

जनगणना में केतना लो आपन मातृभासा भोजपुरी बतवलें एकरो के लेके राज्य सभा में सबाल होखल। साल 2013 में पूछल गइल अइसने एगो सबाल के जबाब में गृह राज्य मंतरी आर.पी.एन. सिंह बतवलें कि 2001 के जनगणना के मुताबिक़ भोजपुरी के आपन मातृभासा दर्ज़ करावे बाला लो के तादाद 33,099,497 रहे।

भोजपुरी : बोली भा भासा?

संसद के सुरुआती दौर में कइगो सांसद लो अइसनो रहे जे भोजपुरी के भासा माने ख़ातिर तइयारे ना रहे। मसलन, बिहार के बी.के.पी सिन्हा फ़रबरी 1953 में रास्टपति के भासन पे सदन में धन्यबाद परस्ताव के चरचा में आपन बात राखत घरी कहलें कि उ भासा के लिहाज़ से प्रांत बनावला के हामीं बाड़न। बाकिर उहाँ के मैथिल राज्य के बिरोध आपन ओही भासन में कइलें आ कहलें कि 'भोजपुरी, मैथिली, मगही खाली बोली बाड़ीं सऽ। केवनो आधार पे एकनीं के भासा ना कहल जा सकेला।'

बोली आ भासा से जुड़ल ई मुद्दा 1967 में फेरु तब राज्य सभा में उठल जब उहवाँ सिच्छा आयोग (1964-1966) के रपट पे बहस होत रहे। केरल के सांसद बालचंदर मेनन कमीसन के रपट पे आपन बात राखत घरी भासा, रास्ट आ रास्टीयता लेखा मुद्दा उठवलें। हिंदी भासी इलाक़ा के सम्बन्ध में उहाँ के ख़याल रहे कि एही इलाक़ा में सात-आठ गो भासा बाड़ीं सऽ। जेमा मैथिली, मगधी, भोजपुरी आ

राजस्थानी लेखा भासा तऽ पूरा उन्नत भासा बाड़ीं सऽ। उहाँ के ख़याल रहे कि भारत एगो बन रहल रास्ट बाटे जेकरा भीतर तमाम रास्टीयता समाइल बाड़ीं सऽ। देस के तमाम भासा आ संस्कृति के बीच आदान-प्रदान होखे एही ख़ातिर उहाँ के अनुबाद पे ज़ोर दिहलीं। एही बहस में बलिया के रहे बाला सांसद तारकेश्वर पांड़ेहु भाग लिहलें। उहाँ के हिंदी के रास्ट्रभासा के रूप में देखे चाहत रहीं। हिंदी पे ओही घरी जेवन आरोप लागत रहे ओही सभनी के उहाँ निराधार बतवलीं। उहाँ के कहलीं कि भोजपुरी ओनकर मातृभासा बाटे बाकिर उ रास्ट्रभासा के रूप में हिंदी के समर्थन करब : 'हमार मातृभासा भोजपुरी बाटे। हम अपना घर आ रोज़ाना जीवन के बेवहार में भोजपुरी भासे के इस्तेमाल करींला। बाकिर हम आपन भासा के मोह छोड़ के हिंदी के स्वीकार करींला, काहें? काहें कि हमनी के चाहींला कि भारतबरस के एगो भासा होखे जेमे भारत के लोग बोलें-चालें, आदान-प्रदान होखे। आ उ भासा हिन्दीये हो सकेले।' भोजपुरी भासी इलाक़ा के राज्य सभा सांसदन के दिहल भासन में मातृभासा के प्रसंग कई हाली आइल बाटे। बाकिर ओहिजो भोजपुरी के लेके भासा आ बोली के द्वंद्व देखे में आवेला।

साल 1967 में जब सदन में राजभासा (संसोधन) बिधेयक पेस भइल, तब भासा के मसला फेरु बड़ा ज़ोरदार ढंग से उठल। ओही बहस में के. दामोदरन, तारकेश्वर पांडे, एम.पी. शुक्ला, राजनारायण लेखा लो हिस्सा लिहलें। केरल के सांसद दामोदरन सदन के चेतवलें कि हिंदी के समर्थक लो जेवन बेवहार कर रहल बाटें ओकरा से त गैर-हिंदी भासी लोग के हिंदीबिरोध बढ़बे करी। हिंदी के समपरक भासा बनावला के बिचार के उहाँ के बिरोध ना करत रहीं, बाकिर उहाँके कहनाम रहे कि ई काम जल्दी आ बरियारी कइला से बिगड़ जाई, एकरा ख़ातिर धीरज राखे के पड़ी। हिंदीभासी इलाक़ा के लेके ओनकर

ख़याल रहे एही इलाक़ा में मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी आ आउरी तमाम भासा बाड़ीं सऽ, जेवन कि पूरा बिकसित बाड़ीं सऽ। का ओही भासा के बोले बाला लोगन के माँग के अनसुना क दिहल जाई। का ओ भासन के संगे उहे बेहवार होखी जेवन कि उर्दू के संगे हो रहल बाटे। का ओही भासन के बिकास कइला के अधिकार ना दिहल जाई।' कुछ इहे बात आंध्र परदेस के सांसद एन. वेंकटेश्वर रावो कहलें। उहाँ के कहनाम रहे कि 'आपन मौजूदा सरूप में हिंदी सै साल से पुरान नइखे। आज के जेवन हिंदी इलाक़ा बाटे उ ब्रज, बुंदेली, मारवाड़ी, मेवाती, मालवी, अवधी, मगही, बघेली, छत्तीसगढ़ी आ भोजपुरी लेखा तमाम भासन के इलाक़ा रहे। एही भासन के समूह में से निकलके खड़ी बोली अपना के आजु हिंदी के रूप में स्थापित कइले बिया। आ एकरा में सै बरिस से ढेर के समय नइखे लागल।'

साल 2003 में जब राज्य सभा में संबिधान संसोधन के सबाल पे बहस होखत रहे तऽ भोजपुरी के लेके भासा आ बोली के सबाल फेरु उठल। उत्तर परदेस से राज्य सभा के सांसद रमासंकर कौसिक कहलें कि 'भासा आ बोली में फ़रक करेके चाहीं। देस में हज़ारन गो बोली बाड़ीं सऽ। उत्तर परदेस में कईगो बोली बोलल जालीं स। ब्रज, अबधी, बुंदेली, भोजपुरी, मगधी, राजस्थानी ई कुल्ही बोली हईं स, भासा ना।' उहाँ के इहो जोड़लीं कि जो बोलियन के एही तरे मान्यता मिली, आ भासा आ बोली में फ़रक ना होखी तऽ हिंदी के राजभासा के पद छिना जाई।' पच्छिम बंगाल के सांसद चंद्रकला पांडे के इहे बिचार रहे कि अबधी, बघेली, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, ब्रज ई सगरी हिंदी के उपबोली बाड़ीं सऽ।

एही बहसन के देखला से एतना त साफ़ बुझा जाला कि भासा आ बोली के केवनो एगो परिभासा ना रहे। बखत-बखत पे सांसद लो ख़ातिर कबहुँ भोजपुरी भासा बन जाव, त कबहुँ बोली बना दिहल जाव।

बोली आ भासा बतावला के केवनो कसौटी भा मानक त रहे ना, ई नेता लो के आपन निजी रुझान आ बिचार पे निर्भर रहे।

भोजपुरी भासा, भोजपुरी राज्य

साल 1969 में उत्तर परदेस से राज्य सभा के मेम्बर सीताराम जयपुरिया एगो प्रस्ताव सदन में राखलें। एही प्रस्ताव के उद्देस रहे आर्थिक आ प्रसासनिक लिहाज़ से भारत के पाँच इकाई (ज़ोन) में बाँटला के। एही प्रस्ताव पे राज्य सभा में ख़ूब बहस होखल जेमा के. चंद्रशेखरन, महाबीर प्रसाद भार्गव, बी.एन. मंडल, बी.डी. खोबरागड़े, राजनारायण, पंढरीनाथ सीतारामजी पाटिल लेखा लो हिस्सा लिहल। सीताराम जयपुरिया जब आपन प्रस्ताव के चर्चा चलावत रहलें तऽ उ भासा के सबालो उठवलें। कुछ मेम्बर लो बहस में कहले रहलें कि जवन पाँच ज़ोन के बिचार सीताराम जी दिहले बानीं, ओमा हरेक ज़ोन में पाँच-छह गो भासा बोलल जालीं सऽ। एही सबाल के जबाब दिहत सीताराम जी कहलीं कि अबहियों जेवन राज्य बाड़न सऽ उहवाँ स्थिति में केवनो फ़रक नइखे। उहाँ के बिहार के उदाहरन दिहलीं जहाँ हिंदी, भोजपुरी आ दोसर कईगो भासा बोलल जात रहलीं स। सीताराम जयपुरिया कहलें कि 'देस में अबहीं तमाम भासा बाड़ीं सऽ जेवना के अभी संज्ञान में लेवल जाए बाक़ी बा। जो हमनी के ई बिचार पे चलब जा कि हर राज्य भा क्षेत्र के एगो भासा होखे के चाहीं, त ई देस में पंद्रह-सोरह गो राज्य ना सैकड़न ज़ोन बनावे के पड़ जाई। एही ख़ातिर मंत्री महोदय से अनुरोध कर रहल बानीं कि एही मुद्दा पे ख़ूब ठंडा दिमाग़ से सोच-बिचार करीं आ देखीं कि ई देस ख़ातिर नीमन बा कि ना।'

साल 2007 में सांताराम लछिमन नायक सबाल पूछलें कि का सरकार के नया राज्य बनावे ख़ातिर कुछ परस्ताव मिलल बाटे। एकरा जबाब में गृह राज्य मंतरी मानिकराव गावित बतवलें कि देस के तमाम इलाक़ा से नाया राज्य बनावे ख़ातिर बखत-बखत पे माँग उठत रहेले। उत्तर परदेस के संदर्भ में उहाँ के बतवलीं कि बुंदेलखंड, भोजपुरी भासी इलाक़ा (पुर्बांचल), ब्रज परदेस, अवध परदेस आ हरित परदेस बनावला के माँग उठत रहेले।

रेडियो आ टीवी पे भोजपुरी : प्रसारण के सबाल

सुरुआती दौर में संसद में रेडियो आ बाद में जाके टीवी क ज़माना आइला के बाद दूरदरसन पे भोजपुरी परोग्रामन के लेके सबाल उठल। मई 1954 में नवाब सिंह चौहान सूचना आ प्रसारण मंत्री से सबाल पूछलीं कि देहली रेडियो से होखे बाला प्रसारण में ब्रजभासा के केवन परोग्राम होखेलें सऽ। उहाँ के दिहल जबाब में सूचना मंत्री बी.वी. केसकर बतवलें कि हिंदी के बोलियन भोजपुरी, अबधी आ ब्रजभासा में लेक्चर आ ड्रामा के प्रसारण देहली रेडियो से होखेला। बाकिर ई प्रसारण कबहुँ-कभार होखेला, रोज़ाना ना।

अस्सी के दसक में 'करेंट' मैगज़ीन एगो ख़बर छापल कि जब मारीशस के उप-प्रधान मंतरी हरीश बुधु भारत के सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी संगे मुलाक़ात करत घरी हिंदी आ भोजपुरी में दूरदरसन के कुछ परोग्राम आ फ़िलिम माँगले तऽ उहाँ के हिंदी के बजाय अंगरेज़ी के परोग्राम दे दिहल गइल। हीए ख़बर के लेके अश्वनी कुमार आ लाखन सिंह राज्य सभा में सबाल उठवलें। ओकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी एच.के.एल. भगत बतवलें कि 6 जनवरी 1983 के भइल मीटिंग में हरीश बुधु

दूरदरसन के बनावल हिंदी, तेलुगु, तमिल, मराठी के परोग्राम माँगलें। दूरदरसन ओही घरी भोजपुरी में परोग्राम ना बनावत रहे, एही ख़ातिर उहाँ के दोसर भासन के परोग्राम दिहल गइल।

भोजपुरी में बने बाला फ़िलिम के लेके भी सांसद लो सबाल उठवलें। मसलन, मार्च 1985 में रजनी रंजन साहु पूछलें कि साल 1983 आ 1984 में पटना से केतना भोजपुरी फ़िलिम बनल बाड़ीं सऽ। एही सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी वी.एन. गाडगिल बतवलें कि सेंसर बोर्ड के मुताबिक़ पटना से 1983 में एगो फ़िलिम बनल, आ 1984 में एकहु फ़िलिम ना बनल। एही तरे दूरदरसन से भोजपुरी आ दोसर छेत्रीय भासा के केतना फ़िलिम देखावल जाता, एकरो के लेके राज्य सभा में बखत-बखत पे सबाल उठल। नवम्बर 1987 में एस.एस. अहलुवालिया सबाल पूछलें कि जनवरी 1986 से अगस्त 1987 ले दूरदरसन केतना छेत्रीय भासा के फ़िलिम देखवले बाटे। एकरा जबाब में सूचना राज्य मंतरी अजीत पांजा जेवन सूचना दिहलें ओकरा मुताबिक़ एही दरमियान एगो भोजपुरी फ़िलिम दूरदरसन पे देखावल गइल। अहलुवालिया जब भोजपुरी फ़िलिम के नाम जानल चाहलें त बतावल गइल कि 25 जुलाई 1987 के दूरदरसन के दिल्ली स्टेसन से ‘दंगल’ फ़िलिम देखावल गइल। इहो बतावल गइल कि जनवरी 1985 से जुलाई 1987 ले दिल्ली स्टेसन से तीन गो भोजपुरी फ़िलिम देखावल गइल बाटे।

एही तरे मार्च 1991 में डॉ. वाई. सिवाजी के पूछल सबाल ‘पिछलका तीन बरिस में देस के तमाम भासन में क गो फ़िलिम बनल बाड़ीं स’, के जबाब में सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी सुबोध कांत सहाय फ़िलिमन के संख्या बतवलें। ओही आँकड़ा के मुताबिक़ साल 1988 से लेके 1990 के बीच सेंसर बोर्ड भोजपुरी में बनल 23 फ़िलिमन के साटिफ़िकिट दिहले रहे।

एकइसवीं सदी में भोजपुरी फ़िलिम के बनला में आउर तेज़ी आइल। राज्य सभा में अगस्त 2005 में पूछल एगो सबाल जे जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी एस. जयपाल रेड्डी जेवन जानकारी दिहलीं ओकरा मुताबिक़ साल 2002 से 2004 ले सेंसर बोर्ड कुल्ही 38 भोजपुरी फ़िलिमन के साटिफ़िकिट दिहल। बरिस 2005 में सबका ले ढेर 21 भोजपुरी फ़िलिमन के सेंसर बोर्ड मंज़ूरी दिहले रहे।

रेडियो से होखे बाला प्रसारन के लेके अप्रैल 2001 में एच.एम. खान सबाल पूछलीं कि देस भर में आकासबनी के केतना प्रसारन केंद्र बाड़ें सऽ आ ओकनीं के मुख्य आ दोसर भासा का बाड़ीं सऽ। एही सबाल के जबाब में सूचना आ प्रसारण मंतरी सुसमा स्वराज बतवलीं कि देस भर में 208 प्रसारन केंद्र बाड़ें सऽ। एही जबाब से इहो पता लागेला कि ओही घरी देस के दुगो प्रसारन केंद्र गोरखपुर आ पटना से भोजपुरियो भासा में प्रसारन होत रहे। एही जबाब में दिहल आँकड़ा अधूरा रहे। काहें कि दुई बरिस बाद इहे सबाल दिसम्बर 2003 में प्रो. सैफ़ुद्दीन सोज़ आ अबु आसिम आज़मी उठवलें, त सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी रबिसंकर परसाद बतवलें कि देस भर में आकासबानी के 209 केंद्र बाड़ें सऽ। एमें छह राज्य में फइलल बारह गो केंद्रन पे भोजपुरियो में परोग्राम के प्रसारन होखत रहे। भोजपुरी परोग्रामन के प्रसारन करे बाला राज्य रहलें सऽ : बिहार (पटना, भागलपुर, सासाराम), उत्तर परदेस (लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, ओबरा, गोरखपुर), झारखंड (राँची), छत्तीसगढ़ (अम्बिकापुर) आ मध्य परदेस (भोपाल, साहडोल)।

एफ़एम स्टेसन आ ओकनी के भासा के लेके सबालो राज्य सभा में उठल। फ़रबरी 2014 में पी. राजीव पूछलें कि पिछिला पाँच बरिस में सूचना आ प्रसारण मंतरालय केतना एफ़एम स्टेसन के मंज़ूरी दिहले

बा आ ओकनी के भासा का बाटे। एही सबाल के जवन जबाब सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी मनीष तिबारी दिहलें ओकरा से मालुम चलेला कि 2009 से 2014 के बीचे बिहार राज्य में छह गो एफ़एम स्टेसन के मंज़ूरी दिहल गइल आ ओ सभनी के भासा हिंदी, भोजपुरी आ मगही रहे। ई स्टेसन बेतिया, भागलपुर, फ़ारबिसगंज, मधुबनी, मोतिहारी, मुज़फ़्फ़रपुर, सहरसा में खुले के रहलें सऽ।

रेडियो से प्रसारित होखे बाला ख़बर के भासा के लेके सबालो राज्य सभा में उठल। मई 2016 में हुसैन दलवई पूछलें कि रेडियो पे प्रसारित होखे बाला ख़बर आ समसामयिक चरचा केतना भासा में प्रसारित होखेला। एकरा जबाब में सूचना आ प्रसारण राज्य मंतरी राज्यबर्धन सिंह राठौर बतवलें कि आकासबानी से कुल्ही 77 भासा में ख़बर आ समसामयिक चरचा के प्रसारण होखेला। एही 77 भासा में भोजपुरियो सामिल बा।

जाहिर बा कि राज्य सभा में सांसद लो भोजपुरी के तमाम पच्छ के लेके चरचा कइलें। एकरा में भोजपुरी के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के माँग से लेके, जनगणना में भोजपुरी के सबाल, भासा आ बोली के सबाल, साहित अकादमी से भोजपुरी के मान्यता के सबाल आ रेडियो-टीवी पे भोजपुरी कार्जक्रम के प्रसारण के सबाल सामिल रहलें सऽ।

सांसद गैलरी (राज्य सभा)

ईश दत्त यादव (उत्तर परदेस)

नागेस्वर परसाद साही
(उत्तर परदेस)

लालू परसाद यादव (बिहार)

अली अनवर (बिहार)

राम किरपाल यादव (बिहार)

एस.एस. अहलुवालिया (झारखंड)

राधा मोहन अगरवाल (उत्तर
परदेस)

सी.पी. नारायणन (केरल)

सिव प्रताप सुकुल (उत्तर परदेस)

राकेस सिनहा (नामित)

पवन कुमार वर्मा (बिहार)

नीरज सेखर (उत्तर परदेस)

(साभार : डिजिटल संसद)

भोजपुरी : संसद से सड़क ले...

एही किताब के पिछिलका अध्यायन में हमनीं के भोजपुरी भासा के लेके संसद के दुनो सदन में होखल चरचा के पड़ताल कइलीं जा। ओ चरचा के तमाम पच्छ के समझला के कोसिस कइलीं जा। भासा के समाजिक आ सांसकिरतिक पच्छ त बटले बा, एकरा संगे ओकर एगो राजनीतिक पच्छो होखेला, एमे केवनो दु राय नइखे। आ भासा के ओही राजनीतिक पच्छ के समझे ख़ातिर संसद से नीमन जगह भला दोसर केवन होखी। भासा से जुड़ल नीति बनइला के सबाल होखे, भासा के संबिधानिक दर्जा दिहला के मामिला होखे आ चाहे जनगणना के मुद्दा होखे, ई सगरी बड़ महत्त्व के मुद्दा बाड़ें सऽ। आ ई कुल्ही मुद्दा पे संसद में बखत-बखत चरचा आ बहस, सबाल-जबाब होखल। भोजपुरी के लेके एगो माँग जवन सुरु उठ रहल बा, भोजपुरी के संबिधान के अठवाँ अनुसुची में सामिल कइला के, उ अबहीं ले हक़ीक़त नइखे बनल। संसद में भोजपुरी के लेके का फ़ैसला होखी, ओकरा के अठवाँ अनुसुची में जोड़ल जाइ कि ना, का संसद में भोजपुरी में भासन दिहल आ सपथ लिहल सम्भव होखी, ई तऽ आवे बाला बखत बताई।

बाकिर इहो इयाद राखे के चाहीं कि भासा के दुनिया खाली संसद ले सिमटल नइखे। भासा के दुनिया के फैलाव बहुत बाटे आ संसद आ भासा नीति तऽ ओकर खाली एगो छोट हिस्सा ह। भासा के रचला-गढ़ला के काम संसद में ना सड़क पे होखेला। ई भोजपुरिया इलाक़ा के आम लोग हवें जे एही भासा के

गढ़ले आ सँवरलें बाड़ें, ओकर थाती के सम्हरले बाड़ें। आ इहे लो भोजपुरी भासा के क़ाफ़िला आगे ले जइहें।

आजु बैस्वीकरन के ज़माना में जहवाँ एक ओरी सम्भावना के खिड़की खुलत बिया, त दोसरकी ओर नया-नया चुनउतियो आ रहल बाड़ीं सऽ। एही दउर में हिंदुस्तान लेखा बहुभासिक देस में भासा आ संसकिरती के बिबिधता के सहेजल एगो अइसने चुनौती ह। भासा के संघर्स आ देस के बिकास के लेके सत्तर के दसक में भासा के बिद्वान ज्योतिरिंदर दासगुप्ता एगो बड़ा जबरजस्त किताब लिखले रहलें।[10] उहाँ के कहनाम रहे कि केवनो देस में कइगो भासा के होखल ओही देस के बिकास में बाधक नइखे, बलुक बहुभासिक होखल ओही देस के बिकास आगे बढ़ावे बाला कारक बाटे।

हमनीं के इहो समझे के चाहीं भोजपुरी लेखा मातृभासा के जब सड़क से लेके संसद में पूरा सम्मान आ ओकर वाजिब हक़ मिली, तऽ हिंदुस्तान के लोकतंत्र आउरी मज़बूत होखी। सिच्छा, सरकार-प्रसासन आ न्याय के भासा के सबाल एकरे से जुड़ल बा। इस्कूल, कॉलेज आ इनवरसिटी में भोजपुरी आ दोसर मातृभासन के जगह मिले; सरकार आ प्रसासन के भासा आ सरकारी दस्तावेज में एही मातृभासन के जगह दिहला के कोसिस होखे; आ एह सभसे बढ़के कोरट-कचहरी में अंग्रेज़ी, हिंदी के संगे भोजपुरी लेखा भासन में वकालतनामा आ जज लो के दिहल फ़ैसला के तर्जुमा होखे, तभिएँ जाके हिंदुस्तान

[10] ज्योतिरिंद्र दास गुप्ता, *लैंगवेज़ कांफ्लिक्ट ऐंड नैशनल डिवेलपमेंट : ग्रुप पॉलिटिक्स ऐंड नैशनल लैंगवेज़ पॉलिसी इन इंडिया* (बर्कले : यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफोर्निया प्रेस, 1970).

सही मानी में लोकतंत्र बन सकेला। इहो बात धियान में राखे के चाहीं कि भोजपुरी के माँग उठवला के मतलब हिंदी आ केवनो दोसर भासा के बिरोध नइखे, आ ना भोजपुरी के हक़ मिलला से हिंदी आ केवनो दोसर भासा के केवनो हर्जा होखी। भोजपुरी के वाजिब हक़ आ अधिकार दिहला के मतलब ह, सगरी भासन के अधिकार आ हक़ दिहल। भोजपुरी के सम्मान क मतलब ह, सगरी मातृभासन क सम्मान।

भोजपुरी भासी इलाकन के राज्य सरकार आ ज़िला प्रसासनों के जबाबदेही तय होखे के चाहीं कि ओकनीं के भोजपुरी के बढ़ाबा देबे ख़ातिर अबले का कइले बाड़ीं सऽ, आ आगे एही दिसा में ओकनीं के का काम कइला के योजना बा। भोजपुरी भासी इलाकन के इस्कूल, कॉलेज आ इनवरसिटी में पढ़े-पढ़ावे बाला बौद्धिक तबको के भोजपुरी के भंडार समृद्ध करे ख़ातिर खुलके आगे आवे के चाहीं। भोजपुरी खाली कबिता-कहानी आ गीत-गवनई के भासा बनके ना रह जाव, उ ग्यान-बिग्यान के भासा बने एकरो कोसिस होखे के चाहीं। अनुबाद के आपन भूमिका बाटे, ओकरा के नज़रअंदाज़ ना कइल जा सकेला। अनुबाद के काम आउरी आगे बढ़े के चाहीं। बाकिर जबले भोजपुरी में राजनीत, इतिहास, दरसन, बिग्यान लेखा तमाम बिसयन पे बिद्वान लो कलम ना चलइहें, भोजपुरी के संसार के फैलाव ना होखी।

आजु इंटरनेट, सोसल मीडिया पे सक्रिय लो अपना ढंग से भासा के दुनिया के रच रहल बाड़ें। भोजपुरी के पच्छ में इंटरनेट आ सोसल मीडिया (फ़ेसबुक, ट्विटर, इंस्टागराम आ यूट्यूब) के सिरजनात्मक इस्तेमाल कइला के जरुरत बा। 'भोजपुरी साहित्यांगन' लेखा वेबसाइट केवनो भासा के थाती सहेजला

ख़ातिर इंटरनेट के इस्तेमाल के एगो सानदार उदाहरन बा। 2017 में सुरु होखल 'भोजपुरी साहित्यांगन' के वेबसाइट पे आजु हज़ार से ढेर भोजपुरी के किताब आ भोजपुरी पतरिका के दु सै अंक ऑनलाइन उपलब्ध बाड़ें सऽ। आजु तमाम लो आपन प्रयास से भोजपुरी के अख़बार, पतरिका निकालत बाड़ें, फ़ेसबुक आ दोसर सोसल मीडिया पे हज़ारन लो भोजपुरी में लिख रहल बाड़ें। एही सगरी प्रयासन से सिखला आ ओकनीं के बढ़ावा दिहला के जरुरत बा। भोजपुरी भासा दिन-रात तरक्की करे, एही उमेद के संगे हम भोजपुरिया जवार के कबी केदारनाथ सिंह के कबिता से आपन बात खतम करब। उहाँ के एगो कबिता लिखले रहलीं 'मातृभासा' :

जैसे चींटियाँ लौटती हैं

बिलों में

कठफोड़वा लौटता है

काठ के पास

वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक

लाल आसमान में डैने पसारे हुए

हवाई अड्डे की ओर

ओ मेरी भाषा

मैं लौटता हूँ तुममें

जब चुप रहते-रहते

अकड़ जाती है मेरी जीभ

दुखने लगती है

मेरी आत्मा।

जरुरी संदर्भ

आधिकारिक प्रकासन

कांस्टीट्युएंट एसेंबली डिबेट्स (नई दिल्ली : लोक सभा सचिवालय, 2014)

जॉर्ज ग्रियर्सन (संपा.), *लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया*, खंड 5, इंडो-आर्यन फ़ैमिली ईस्टर्न ग्रुप, भाग 2 (कलकत्ता : ऑफ़िस ऑफ़ द सुप्रिटेंडेंट, गवर्नमेंट प्रिंटिंग, 1903).

जॉर्ज ग्रियर्सन, *सेवन ग्रामर्स ऑफ़ द डायलेक्ट्स एंड सबडायलेक्ट्स ऑफ़ द बिहारी लैंगवेज* (कलकत्ता : बंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस, 1883).

रिपोर्ट ऑफ़ द ऑफ़िसियल लैंगवेज कमीशन (नई दिल्ली : प्रकाशन विभाग, 1956).

रिपोर्ट ऑफ़ द स्टेट रीऑर्गनाइजेशन कमीशन (नई दिल्ली : गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया प्रेस, 1955).

सेंसस ऑफ़ इंडिया 2011, लैंगवेज (नई दिल्ली : ऑफ़िस ऑफ़ द रजिस्ट्रार जनरल, 2011),

किताब

उदय नारायण तिवारी, *भोजपुरी भाषा और साहित्य* (पटना : बिहार-राष्ट्राभाषा परिषद, 2011), तीसरा संस्करण.

कृष्णदेव उपाध्याय, *भोजपुरी साहित्य का इतिहास* (वाराणसी : भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, 1972).

क्रिस्टोफर किंग, *वन लैंगवेज़ टू स्क्रिप्ट्स : द हिंदी मूवमेंट इन द नाइंटीन्थ सेंचुरी नॉर्थ इण्डिया* (बंबई : ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994).

ग्रेनविल ऑस्टिन, द *इंडियन कान्स्टीट्यूशन कॉर्नरस्टोन ऑफ ए नैशन* (नई दिल्ली: ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966[2000]).

ज्योतिरिंद्र दास गुप्ता, *लैंगवेज़ कांफ्लिक्ट ऐंड नैशनल डिवेलपमेंट : ग्रुप पॉलिटिक्स ऐंड नैशनल लैंगवेज़ पॉलिसी इन इंडिया* (बर्कले : यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफोर्निया प्रेस, 1970).

पॉल ब्रास *लैंगवेज, रिलिजन ऐंड पॉलिटिक्स इन नॉर्थ इण्डिया*, (कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974).

बी.एल. शंकर व वैलेरियन रोड्रिग्स, द *इंडियन पार्लियामेंट : ए डेमोक्रेसी एट वर्क* (नई दिल्ली: ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011).

वेबसाइट

लोकसभा के बहस ख़ातिर :

https://eparlib.nic.in

राज्य सभा के बहस ख़ातिर :

https://rsdebate.nic.in

भोजपुरी किताबिन ख़ातिर :

https://bhojpurisahityangan.com

लेखक परिचय

शुभनीत कौशिक

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से इतिहास में स्नातकोत्तर.

सेंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम. फ़िल. और पी-एच.डी.

आधुनिक भारत के इतिहास, महात्मा गांधी के जीवन-दर्शन और हिंदी साहित्य के इतिहास में गहरी रुचि. हिंदी की पत्रिकाओं *प्रतिमान, तद्भव, समयांतर, वागर्थ, आलोचना, मधुमती* आदि में इतिहास और समकालीन मुद्दों पर नियमित लेखन. *इतिहास, भाषा और राष्ट्र* (संवाद प्रकाशन, 2022) पुस्तक प्रकाशित.

संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सतीश चंद्र कॉलेज (बलिया).

ईमेल : kaushikshubhneet@gmail.com